

नई दिल्ली
पालिका समाचार
वर्ष: 42, अंक: 9-10, सितम्बर-अक्टूबर, 2013
(द्विमासिक)

सम्पादक - मण्डल

पालिका समाचार
संरक्षक

जलज श्रीवास्तव
अध्यक्ष

मुख्य सम्पादक
विकास आनन्द
सचिव

उप-मुख्य सम्पादक
ए. के. मिश्रा

प्रकाशक सम्पादक
अनीता जोशी

कार्यकारी सम्पादक
सुनीता बोहाडिया

सहायक सम्पादक
रीमा कामरा

सहयोग
उषा रौतेला
अरविन्द रानी
सुमन कुमार

परामर्शदाता
लक्ष्मण सिंह रमोला

मूल्य

एक प्रति : ₹ 20/-
वार्षिक : ₹ 100/-
पाँच वर्षों हेतु : ₹ 400/-




सम्पादकीय

(सम्पादक की कलम से).....

किसी भी राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास का मापदण्ड शिक्षा होती है, शिक्षा के बिना मनुष्य का विकास सम्भव नहीं है। कोई भी देश अज्ञानता, गरीबी तथा भूख के खिलाफ तब तक तैयार नहीं हो सकता जब तक कि उस देश के नागरिकों में शिक्षा का विकास न हो। वर्तमान युग में शिक्षा को आम लोगों तक पहुँचना आवश्यक हो गया है क्योंकि शिक्षा द्वारा हम रुढ़िवादी परम्पराओं के अंधेरे से निकलकर आज के प्रगतिशील युग में कदम से कदम मिलाकर चल सकते हैं तथा समाज एवम् देश को नयी दिशा प्रदान कर सकते हैं। इसलिए हम सब का यह कर्तव्य है कि शिक्षा के प्रचार-प्रसार में अपनी भागीदारी निभायें तथा शिक्षा के माध्यम से देश की उन्नति में अपना भरपूर सहयोग प्रदान करें।

किसी देश के गौरव का प्रतीक उस देश की भाषा होती है। हम सब का नैतिक कर्तव्य है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनाकर उसका पूरा सम्मान करें। सही अर्थों में भाषा ही किसी देश की पहचान होती है तथा उस देश की सभ्यता, संस्कृति एवम् संस्कार भाषा में से उजागर होते हैं। हिन्दी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषायें भी अपना विशेष स्थान तथा महत्व रखती हैं। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् भाषाओं के प्रति अपना फर्ज निभाते हुए हिन्दी, उर्दू व पंजाबी में पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रही है।

आज के मनुष्य का जीवन अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। इसके साथ ही वर्तमान युग में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण मनुष्य को मनोरंजन के लिए समय निकालना मुश्किल हो गया है। ऐसे समय में त्यौहार ही मनुष्य के जीवन में सुखद परिवर्तन एवम् नये-पन का संचार करते हैं। भारतीय संस्कृति में त्यौहारों/उत्सवों की सुगंध समायी हुई है। त्यौहार ही विभिन्न जातियों, भाषाओं, प्रांतों तथा अलग-अलग सम्प्रदायों के विभिन्न रंगों को एक करने में सदा से ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। गाँधी जयंती एवम् बाल्मीकि जयंती पर महापुरुषों को नमन एवम् दुर्गा अष्टमी, दशहरा, ईद-उल-जुहा की आप सब को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।


मुख्य सम्पादक

1. शिक्षा का स्वरूप - डॉ. हर्षवर्धन शर्मा	3	12. जिद न करो - मेहरबान सिंह नेगी	21
2. इन्सानियत, सहयोग - कृष्ण कुमार नरूला	5	13. श्राद्ध नहीं श्रद्धा कीजिए - रामरती शौकीन	22
3. अनमोल शब्द - पी.डी. पांडे	7	14. अनुशासन आज की आवश्यकता - विपिन शर्मा	24
4. उत्तराखंड की समाजसेवी महिला: गंगोत्री गर्ब्याल - के. आर. पांडे	7	15. फितरत, कालांतर - उमाकांत खुबालकर	25
5. साहसी सारथी - दीपांशु जैन	10	16. पंछी तुम्हारे बगैर तो फिर प्यार कहाँ है	26 27
6. "सुन यशोदा के श्याम" - के. के. शर्मा	12	- सुनीता शानू	
7. सवैधानिक मान्यता के बावजूद, उपेक्षा की शिकार-हिन्दी - प्रो० योगेश चन्द्र शर्मा	13	17. खो गया है: आदमी - सत्यानारायण इंदौरिया 'सत्य'	28
8. सुख का सुराग - डॉ. दिनेश चमोला "शैलेश"	15	18. अच्छा लगता है, स्मृतियाँ - ओमप्रकाश बजाज	29
9. कौन महत्त्वपूर्ण - डॉ. दिनेश चमोला "शैलेश"	16	19. हँसने में है जीवन का प्रभात: - अभय कुमार जैन	30
10. अधूरापन अभाव एवं असन्तोष से कैसे बचें - ओ. पी. शर्मा	17	20. महात्मा गाँधी-अनुभूतियाँ एवं जीवन दर्शन - पी. डी. सिंह	33
11. दंत स्वस्थ: क्या व कैसे? - आर. बी.एल. गर्ग	19	21. अनन्य वचन -रीमा कामरा	35
		22. मैं तुम्हें फिर मिलूँगी	36
		23. आपके पत्र आपकी नज़र	37
		24. परिषद् गतिविधियाँ	38-40

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, उन पर सम्पादक-मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सम्पादक को रचनाओं में संशोधन एवम् काट-छांट करने का पूरा अधिकार है। इन विचारों पर किसी प्रकार के आक्षेप का दायित्व भी लेखकों का ही है किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा- सम्पादक

सम्पर्क सूत्र

सम्पादक-पालिका समाचार, हिन्दी विभाग, कमरा नं. 1209, 12वीं मंजिल, पालिका केन्द्र, संसद मार्ग, नई दिल्ली- 110001,
दूरभाष : 41501354 - 70/3209 वेबसाइट: www.ndmc.gov.in

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के लिए अनीता जोशी द्वारा प्रकाशित तथा

नूतन प्रिन्टर्स, एफ-89/12, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 द्वारा मुद्रित, फोन नं. 011-26817055

शिक्षा का स्वरूप

- डॉ हर्षवर्धन शर्मा

शिक्षा एक ऐसा शब्द है, ऐसी सतत् प्रक्रिया है जो मानव के जन्म से मृत्यु पर्यन्त सम्बन्धित है। शिक्षा वह क्रिया है जो मनुष्य की बुद्धि के विकास से लेकर राष्ट्रीय विकास तक का मापदण्ड मानी जाती है अर्थात् शिक्षा वह सतत् प्रक्रिया है जो जीवन काल में कभी पूर्ण नहीं होती तथा जिज्ञासु (शिक्षार्थी) के लिए नित नये मार्ग प्रशस्त कर उसे सन्तुष्ट करने का प्रयास करती रहती है। इस हेतु शिक्षक ही वह माध्यम है जो हमारी अमूल्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक थाती को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित करता है। वह चाहे विद्यालय का शिक्षक हो अथवा घर की शाला में माँ-

नैतिक एवं उत्तम शिक्षा जहाँ जीवन में सफलताओं की सीढ़ियाँ चढ़ने में सहयोगी होती है, जीवन को देदीप्यमान कर उसे अनुकरणीय बना देती है वहीं इन गुणों के विपरीत, पटरी से उतरी हुई शिक्षा व्यक्ति के स्वयं के जीवन के लिए अभिशाप बन राष्ट्र एवं पूरे समाज के लिए अनेकों प्रकार की बाधाओं के रूप में सामने आकर शर्मनाक स्थिति उत्पन्न कर देती है।

मानव जीवन में शिक्षा एवं शिक्षक के प्रथम स्तम्भ के रूप में हमारे समक्ष है माँ। यही वह प्रथम पाठशाला है

जिसका दूध भी हमारे जीवन पर सदैव प्रभावी रहता है। संयुक्त परिवारों के अभाव में दादा-दादी की प्रेरणा दायक कहानियों से वंचित बच्चे पूर्ण रूप से माँ पर ही निर्भर रहते हैं। अतः माँ ही बालक को संस्कार एवं मर्यादा तथा राष्ट्र प्रेम का पाठ पढ़ाने वाली प्रथम पाठशाला है। संयुक्त परिवारों के न होने से बच्चे एकाकी एवं समाज तथा रिश्तों से दूर हो जाते हैं जिससे उनके सर्वांगीण विकास में बाधा आती है। अस्तु माँ को अपने में उत्तम संस्कार राष्ट्र प्रेम की शिक्षा के साथ ही रिश्तों सम्बन्धी शिक्षा भी बच्चों को दिया जाना अनिवार्य है। जिस प्रकार किसी विशाल भवन की नीवें का मजबूत होना प्रथम आवश्यकता है ठीक उसी प्रकार नैतिक आचरणों से परिपूर्ण, भ्रष्टाचार रहित सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण के लिए बच्चों में राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव तथा उनमें उत्तम-संस्कार प्रतिपादित करना माँ का दायित्व है। यही शिक्षा का प्रथम सोपान भी है।

आज हम यदि माँ और बच्चे के बीच चलने वाली इस पाठशाला में झाँके तो परिणाम लगभग शून्य ही मिलेगा। वर्तमान में 'एक शिक्षित महिला दो परिवारों को शिक्षित करती है' की अवधारणा किसी हद तक सही लगती है परन्तु संस्कार विहीन शिक्षा संस्कार विहीन राष्ट्र का ही निर्माण करेगी। संस्कार विहीन राष्ट्र का अर्थ होगा, संस्कृति रहित देश। जिस समाज की, देश की संस्कृति की पहचान ही ना रहे वह देश, वह समाज कब तक टिक पाएगा। इस संस्कार रहित शिक्षा की परिणीति हम रोज़ बनते और पनपते जा रहे 'वृद्धाश्रमों' के रूप में देख रहे हैं। अतः जीवन की प्रथम पाठशालाकाल (माँ के सानिध्य में गुजरने वाले वर्षों) में संस्कार युक्त शिक्षा दिया जाना अत्यावश्यक है। बच्चों में बड़ों का आदर करने छोटों को प्यार करने, मिल बाँटने की भावना माँ से ही मिलती है। अपने बच्चों के सामने उनके शिक्षक की आलोचना या अनादर भाव का प्रदर्शन कभी न करें क्योंकि बच्चा माँ की नकल करता है। हमें इस ओर गंभीर प्रयास करने होंगे।

दूसरे पायदान के रूप में बालक पाठशाला में प्रवेश पा कर उन शिक्षकों के पास जाता है जिन्हें भारतीय संस्कृति में गुरु कह कर ईश स्वरूप माना जाता है। जिनके प्रति यह धारणा है कि 'शिक्षक वह मशाल है जिसके द्वारा अनगिनत मशालें प्रज्वलित कर समूचे राष्ट्र को अज्ञान रूपी अन्धकार से मुक्त कराया जा सकता है। "ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रं" कहा है जिस की प्राप्ति केवल शिक्षक द्वारा ही संभव है। यहाँ यह विचारणीय है कि 'क्या केवल किताबी शिक्षा ही जीवन के सब उद्देश्यों को पूरा करने में समर्थ है'? क्या स्कूली शिक्षा द्वारा ही सर्वांगीण विकास संभव है? सच तो यह है कि हमारी शिक्षा प्रणाली आज भी लार्ड मैकाले द्वारा स्थापित बाबू पैदा करने वाली शिक्षा के इर्द-गिर्द ही घूम रही है।

विद्यार्थी एवं शिक्षक के सम्बन्धों की पवित्रता, शुचिता एवं महानता का अकाल दिखाई पड़ता है। शिक्षक के अपमान, उनके साथ हाथापाई तक कर डालने की उद्दंड प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ती जा रही है। इसके लिए जहाँ शिक्षा का व्यवसायीकरण किया जाना तथा कलयुगी शिक्षकों का आचरण जिम्मेदार है वहीं अभिभावकों द्वारा शिक्षकों के साथ किए जाने वाला व्यवहार भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। वस्तुतः आज हमने अर्थ प्रधान भौतिकवादी युग की इस अन्धी दौड़ में अपना सभी कुछ दाँव पर लगा दिया है। दाँव तो शब्द ही घूत क्रीड़ा की देन है जो अतंतः पतन की ओर ही ले जाता है।

शिक्षा विभाग को जहाँ शिक्षा को रोजगारपरक बनाने हेतु स्कूली शिक्षा में तकनीक को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना आज की आवश्यकता बन गया है वहीं अनुशासन तथा उच्च नैतिक मूल्यों और अपनी मूल संस्कृति का ज्ञान कराया जाना सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक होना चाहिए था उसके स्थान पर बच्चों में हीन भावना को प्रोत्साहित करने वाली, भिक्षुक स्वरूपा हाथों में कटोरे लिए बच्चों की कतारें तथा करोड़ों रूपयों का बोझ बनाने के साथ ही भ्रष्टाचार की जनक बनी 'मिड डे मील'

सरीखी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। अतः आवश्यक है कि ऐसी योजनाओं को बन्द करके नैतिक एवं भ्रष्टाचार रहित, रोजगारपरक शिक्षा नीति राष्ट्रीय स्तर पर शुरू की जाए, जिससे अनुशासित शिक्षा, अपने संस्कारों तथा भारतीय संस्कृति को भावी पीढ़ी में प्रतिपादित किया जा सके।

हमारा शिक्षक भी विद्यार्थियों के प्रति 'कुम्भकार' होने के भाव का केवल दिखावा न करते हुए उसके अनुरूप व्यवहार करे तथा विद्यार्थी भी शिक्षक के प्रति गुरु भाव (ईश के समकक्ष) से नत मस्तक हो, सम्मान करे और माँ, बच्चों को नैतिकता, संस्कारों तथा राष्ट्रप्रेम की घुट्टी पिलाए। जिस दिन माँ और शिक्षक दोनों ही अपने दायित्वों में इन सभी कार्यों को सम्मिलित करके देश के भविष्य (बच्चों) में नैतिकता-उदारता संस्कार एवं संस्कृति तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता जैसे गुणों के प्रतिपादन में सफल हो जाएंगे उसी दिन शिक्षक एवं अभिभावकों के प्रति हमारी संस्कृति में कहे गए ये शब्द "सर्वत्र विजयमच्छेन पुत्रात् शिष्यात् पराजयम्" अर्थात् "केवल गुरु और पिता ही शिष्य/पुत्र को हर क्षेत्र में विजयी देखते हुए उससे पराजित होने पर गर्व का अनुभव करता है" सार्थक हो उठेंगे। तब भारत को शिक्षा में विकसित करते हुए विकास के शिखर पर पहुँचने में लेशमात्र भी संशय नहीं रहेगा।

शिक्षा एवं शिक्षक के आधार पर ही भारत ने सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन् सरीखे गुरु एवं विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक और डा०ए०पी०जे० अब्दुल कलाम जैसे विश्व विख्यात शिक्षक तथा वैज्ञानिक दिए हैं। डा० राधा कृष्णन् का जन्मदिन 'शिक्षक' होने के कारण ही 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। ऐसी विभूतियाँ जो विश्व क्षितिज पर देदीप्यमान थीं, हैं और रहेंगी, हमारे छात्र एवं शिक्षक इनसे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें तो भविष्य उज्वल ही होगा।

शिवम् 1966/1 बेरीबाग
सहारनपुर- उ०प्र०



इंसानियत

-के० के० नरूला

कर्म ही धर्म है आप जैसा कर्म करते हैं, उसी के अनुसार हर धर्म में उसका एक सम्मान निर्धारित है। जाहिर है-धर्म चाहे कोई भी हो।

किसी भी धर्म में बुराई और नफ़रत जैसी बातों का कोई स्थान नहीं है। स्थान है तो सिर्फ इंसानियत का। चूँकि हम इंसान हैं इसलिए हम सबसे यही आशा की जाती है कि इंसानियत को सर्वोपरि रखा जाए। इसे प्राथमिकता दी जाए और इंसान अगर अपना कर्तव्य समझ जाए तो वह कभी गलत रास्ते पर नहीं चलेगा और इंसानियत निभाना ही सबसे बड़ा धर्म है।

जो दयानिधि कुछ तुम्हें आये दया,
तो अछूतों की उमड़ती आह का।
यह असर होवे कि हिन्दुस्तान में
पाँव जम जावे परस्पर प्यार का

रामचन्द्र शुक्ल



सहयोग

“आपको भली-भाँति पता होगा, खासकर बच्चों को कि नई दिल्ली का क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों का केन्द्र है, इसमें विभिन्न देशों के राजदूत, उनके कार्यालय एवं दूतावास हैं।

सम्पूर्ण भारत के प्रतिनिधि, संसद सदस्य और केन्द्रीय मंत्रालय, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन भी हैं। इस क्षेत्र के निवासी अनुभवी एवं शिक्षित हैं।” यह शब्द नई दिल्ली पालिका परिषद के अध्यक्ष श्री चन्द्र छाबड़ा ने 1979 में गणतन्त्र दिवस के विशेषांक में कहे थे।

सहयोग के बारे में बोलते हुए कोऑर्डिनेशन कमेटी सरोजनी नगर के अध्यक्ष सरदार हरवंश सिंह ने अपने सहयोगियों को 1974 में कहें, जिसमें सरोजनी नगर की सारी संस्थाएँ शामिल थीं। उनका भी सहयोग पर जोर था।

दिनांक 5.8.2012 को सीनियर सिटीजन की बैठक में जो साकेत, पी.वी.आर. के सामने हुई, वहाँ माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित का भी यही कहना था कि बिना सहयोग के मैं भी कुछ नहीं कर सकती।

माननीय श्रीमती छाया शर्मा सहआयुक्त दक्षिणी क्षेत्र एवं साकेत पुलिस स्टेशन के अध्यक्ष माननीय राजेन्द्र सिंह जी ने भी सहयोग के बारे में बोलते हुए कहा कि बिना सहयोग के हम किसी भी संस्था की मदद नहीं कर सकते।

यह सहयोग ही है कि हमने संधमारियों के चार ऐसे मुलजिम्ओं को गिरफ्तार कर नवभारत टाइम्स 7.8.2012 की एक रिपोर्ट के आधार पर इनके कब्जे से कई लाख रुपये की जूलरी बरामद की।

यह लोग साउथ दिल्ली की पोश कॉलोनियों को निशाना बनाकर साकेत में एकता अपार्टमेंट से नकद और जुलरी चुराते थे, दूसरी जे० ब्लॉक से जूलरी सेलफोन और कीमती सामान, कोटला मुबारकपुर, हौज खास से भी की गई चोरियाँ

बरामद कर ली, यह आप सभी का सहयोग नहीं तो क्या है।

इसी सहयोग के बारे में मुझे एक लोक कथा याद आती है-

एक हाथी था और एक था बन्दर, दोनों गहरे मित्र थे, शायद आपने भी यह कथा सुन रखी होगी।

हाथी अपनी सूंड को झुकाकर बन्दर की ओर करता कि आओं दोस्त कूद कर मेरी सूंड पर आ जाओ बन्दर कूद कर बैठ जाता और फिर हाथी की सवारी का आनन्द उठाता। फलदार वृक्षों पर बन्दर चढ़ता और मीठे मीठे फल तोड़कर हाथी के लिए डाल जाता। दोनों के दिन मजे में कट रहे थे कि अचानक एक दिन घमण्ड देवता ने दोनों पर आक्रमण कर दिया।

हाथी को अपने मोटे और पहाड़ जैसे शरीर पर घमण्ड पैदा हुआ। बोला, देखो मैं कितना भारी भरकम और ताकतवर हूँ। सारे जहाँ में मेरा ही शोर है। मैं बड़े बड़े पेड़ों को आसानी से गिरा सकता हूँ। क्या तुम ऐसा कर सकते हो?

बन्दर को भी अपनी फुर्तीली टांगों और शक्तिशाली बाहों पर बड़ा गर्व था। बोला-अरे तुम्हारा उपलों जैसा शरीर किस काम का? क्या तुम तेज दौड़ सकते हो।

हाथी को गुस्सा आया। चीखा- अरे ओ पिद्दी के बराबर का जानवर। छोटे मुंह बड़ी बात करता है?

बन्दर बोला-तो क्या तुम मेरे बराबर शक्तिशाली हो? देखते नहीं मैं कितना तेज दौड़ सकता हूँ, हजारों फीट ऊँचा इस पेड़ से उस पेड़ तक चढ़ सकता हूँ, क्या तुम मेरी बराबरी कर सकते हो। इस बात में दोनों में कहा सुनी-झगड़ा होने लगा। ऊपर बैठा एक बुजुर्ग नीलकण्ठ यह सब दृश्य देख रहा था, बोला तुम आपस में लड़ते क्यों हो? इस पर हाथी और बन्दर एक साथ बोले "काका" ज़रा यह तो बताओं कि हम दोनों में अधिक शक्तिशाली कौन है? बताइए शरीर में ताकतवर होना अधिक अच्छा है या फुर्तीला होना।

नीलकण्ठ ने कहा- अच्छा तुम लोग एक काम करो। देखो नदी के दूसरी ओर एक छोटा सा बाग है। केलों का नहीं जामुन का भी पेड़ है। जाओ, देखे पहले कौन तोड़ कर फल लाता है इससे मालूम हों जाएगा कि कौन आपमें ज्यादा ताकतवर है।

इस प्रकार वे दोनों फल तोड़ने के लिए नदी तट की ओर दौड़ने लगे। नदी का बहाव इतना तेज था कि बन्दर जल्दी पहुँच कर भी किनारे पर रूक गया और डर गया तब तक हाथी भी नदी तट पर पहुँच गया और बोला कहो, कैसे रूक गये?

बन्दर नदी के तेज बहाव की ओर संकेत कर मायूसी से ताकने लगा।

हाथी ने कहा घबराते क्यों हो, तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ। मैं भारी भरकम और ताकतवर हूँ। तेज़ी से बहती हुई नदी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। इस पर बन्दर कूद कर हाथी की पीठ पर चढ़ा और दोनों ने तेज बहती हुई नदी पार कर ली।

दूसरे पार जाने पर उन्होंने देखा कि पेड़ काफी ऊँचाई पर है और उसमें बहुत फल लगे हैं। हाथी की सूंड पेड़ तक ही नहीं पहुँचती थी, फल तो और भी ज्यादा ऊँचाई पर थे यह देख बन्दर बोला जरा ठहरो, मैं पेड़ पर चढ़ सकता हूँ यह कह वह कूदकर पेड़ पर चढ़ गया उसने खूब पके हुए फल तोड़कर नीचे फेंकते हुए कहा लो तुम ले लो, हाथी ने अपनी सूंड में भर लिए, फिर वे दोनों उसी प्रकार नदी पार करके लौट आए और सारे फल लाकर नीलकण्ठ के सामने रख दिए, नीलकण्ठ बोले अब तुम खुद समझ गये हो कि तुम दोनों में कौन अच्छा है, फलों को पाने के लिए हाथी की ताकत और बन्दर की फुर्ती की जरूरत पड़ी, एक ने नदी पार की और दूसरे ने फल तोड़े।

अब आप समझ गये होंगे कि आपसी सहयोग कितना आवश्यक है। उसी प्रकार का सहयोग जनता और दूसरे संस्था विभागों और नगरपालिका एवं पुलिस में बना रहना चाहिए। इसमें जनता और संस्थाओं, दोनों का हित है और साथ ही देश का कल्याण भी।

वास्तव में सहयोग सब से बड़ा है, जब कोई काम सहकारी ढंग से किया जाए तो सफलता निश्चय ही मिलती है।

के-36/सी, साकेत
नई दिल्ली

अंनमोल शब्द

- पी.डी. पांडे

1. व्यापार में किसी के साथ **साझेदारी** नहीं करनी चाहिए।
2. किसी को रूपया उधार दो, तो **वापिस लेने** की इच्छा नहीं करनी चाहिए।
3. **दान** देने की भावनाएँ बनाये रखनी चाहिए।
4. **भूखे व्यक्ति** को खाना खिला देना चाहिए।
5. अपने घर में किसी को **आश्रय** नहीं देना चाहिए।
6. अपनी **गोपनीय** बातें किसी को नहीं बतानी चाहिए।
7. किसी कागज को पढ़े बिना, **समझे बिना हस्ताक्षर** नहीं करना चाहिए।
8. **आपातकाल** के लिए धन की रक्षा करनी चाहिए।
9. महत्वपूर्ण निर्णय **जल्दी** नहीं लेना चाहिए।
10. **व्यर्थ** में किसी के घर नहीं जाना चाहिए।
11. सम्मान **मानव** का नहीं, उसकी **सम्पन्नता** का होता है।
12. आज का **वफादार**, कल का **बेवफा** भी हो सकता है।
13. जहाँ **सम्मान** नहीं, उस जगह का **त्याग** कर दो।
14. संसार **शक्ति** की पूजा करता है।
15. मनुष्य की जिंदगी में **आय** का स्रोत बंद होते ही, **अपमान** का स्रोत खुल जाता है।
16. सही दिशा में किया गया परिश्रम **भाग्य** बदल देता है।

जी-2/143, सेक्टर-16
रोहिणी, दिल्ली-110085

उत्तराखंड की समाजसेवी महिला: गंगोत्री गर्ब्याल

- के. आर. पांडे

हर वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन देश के महान् शिक्षाविद् भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन का जन्मदिन होने के कारण शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इन्हीं पुरस्कारों की कड़ी में नवम्बर, 1964 में शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाओं के लिए सुश्री गंगोत्री गर्ब्याल को तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन के कर कमलों द्वारा सम्मानित किया गया। सुश्री गर्ब्याल का जन्म 9 दिसम्बर, 1918 को उत्तराखंड के सीमावर्ती जिले पिथौरागढ़ में समुद्र तट से साढ़े दस हजार फुट की ऊँचाई पर स्थित गर्ब्याल ग्राम में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री उत्तम सिंह तथा माता का नाम श्रीमती गोबिन्दी देवी था। इस महान् महिला ने अपना सम्पूर्ण जीवन अपनी योग्यता के बल पर सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में महिलाओं, खासकर उत्तराखंड की महिलाओं की सेवा में समर्पित कर दिया। राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित इस सम्मान का श्रेय भी वह जनभावना को ही देती है।

प्रारंभिक शिक्षा चौथी कक्षा तक अपने ग्राम के प्राइमरी स्कूल में ही पूरी की। उन दिनों पिथौरागढ़ आज की तरह जनपद नहीं था। जिला अल्मोड़ा की एक उपेक्षित तहसील थी। शिक्षा एवं आवागमन के साधन न होने के कारण अधिकतर बच्चे आगे की पढ़ाई नहीं कर पाते थे। परन्तु गंगोत्री जी को आगे शिक्षा ग्रहण करने की उत्कट अभिलाषा थी। उनकी दो चचेरी बहनें रन्दादेवी एवं येगा देवी ने पहले से ही अल्मोड़ा में कठोर परिश्रम से अपनी पढ़ाई जारी रखने की ठान ली परन्तु परिवार के लोग इतनी दूर स्कूल भेजने को राजी नहीं थे। बार-बार मां यहीं कहती कि तुम घर के काम में मेरा हाथ बटाओ पर वह नहीं मानी। एक कुली एवं कबरीवालों के साथ वह अल्मोड़ा के लिए रवाना हो गईं। सात दिन पैदल चल कर अपनी आगे की पढ़ाई शुरू करने अल्मोड़ा आ गईं। उन दिनों आवागमन के साधन न होने के कारण इसी तरह लोग जिला मुख्यालय पहुँचते थे। रास्ते में

किसी गुफा में भेड़ बकरियों के साथ ही रात गुजारनी तथा अगले दिन प्रातः जल्दी उठकर आगे की यात्रा शुरू। येगा देवी का सन् 1930 में कुछ महीनों की बीमारी के बाद देहांत हो गया था।

सन् 1931 में वर्नाक्यूलर स्कूल, अल्मोड़ा से मिडिल परीक्षा (कक्षा 6) उत्तीर्ण करने के बाद प्राइमरी टीचर्स सर्टिफिकेट की ट्रेनिंग ली और तत्कालीन जिला विद्यालय निरीक्षक मिस ई विलियम्स की प्रेरणा से उसी स्कूल में अपनी चचेरी बहिन कुमारी रन्दा देवी के साथ अध्यापक की नौकरी शुरू कर दी। एंग्लो इंडियन मिस विलियम पर्वतीय क्षेत्र की महिलाओं की शिक्षा के प्रति विशेष रुचि रखती थीं। उन्हें छात्रवृत्ति देकर पढ़ाई के लिए हमेशा प्रोत्साहित करती रहती थीं। उन्हें कहती यदि शादी हो जाय तो भी पढ़ाई मत छोड़ना। उन्हीं की प्रेरणा से सन् 1937 में मेधावी छात्रा गंगोत्री जी ने एडम्स कन्या हाई स्कूल अल्मोड़ा से हाई स्कूल पास किया। इंटरमीडियेट, बी० ए० एवं एम० ए० की परीक्षाएं प्राइवेट पास की। उत्तराखण्ड के सीमावर्ती जिले की तब वह अकेली पोस्ट ग्रेजुएट महिला थी। अब तो उस क्षेत्र से सैकड़ों महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर देश एवं विदेशों में ऊंचे पदों पर आसीन हैं। उन दिनों ग्रामवासी उनके शिक्षित होने पर खुश नहीं थे। छोटी उम्र में ही लड़कियों की शादी कर दी जाती थी। सुश्री गंगोत्री गर्ब्याल ने अपनी पुस्तक 'यादें' में लिखा है कि- 'वे कहा करते थे कि लड़कियों को पढ़ाने से क्या लाभ है? वे पढ़कर क्या कर लेंगी? क्या जार्ज पंचम की गद्दी पर बैठेंगी? तब जार्ज पंचम ब्रिटेन से भारत पर राज करते थे। गांव वाले यहीं सोचते थे कि ये शिक्षित महिलाएं धर्म परिवर्तन कर इसाई बन जायेंगी। उन दिनों सीमान्त के सुदूर क्षेत्र में भी मिशनरी अपने धर्म के प्रचार में बड़ी प्रयत्नशील थी।

सन् 1935 में जब सुश्री गर्ब्याल एडम्स गर्ल्स हाई स्कूल में नौवीं कक्षा में पढ़ रही थीं तो उनकी मंगनी हो गई। परन्तु शायद विधाता को यह स्वीकार नहीं था। कुछ दिनों बाद संक्षिप्त बीमारी में उनके मंगेतर की मृत्यु हो गई। इस तरह उन्हें अपने जीवन में हाथ पीले करने का अवसर ही प्राप्त नहीं हुआ। तभी उस अबोध बालिका ने अल्प आयु में ही अविवाहित रह कर अपना सारा जीवन दूसरों की सेवा में लगा लेने का संकल्प ले लिया था।

सन् 1939 में गंगोत्री जी की नियुक्ति सी.टी. ग्रेड में कन्या हाई स्कूल बरेली में हो गई। उन दिनों पूरे उत्तर प्रदेश में एक

वही कन्या हाई स्कूल था। बाद में इसको इंटर कालेज का दर्जा दे दिया गया। बरेली से ही इन्होंने ई.टी.सी. (इंग्लिश टीचर सर्टिफिकेट) की डिग्री हासिल की थी। इसके बाद सुश्री गंगोत्री गर्ब्याल ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

इसी बीच अवकाश लेकर राजकीय महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय प्रयाग से एल.टी. की डिग्री भी हासिल की। बाद में जब सन् 1945 में अल्मोड़ा में राजकीय कन्या हाईस्कूल खुला तो उन्होंने अपना ट्रांसफर बरेली से अल्मोड़ा कर लिया। अल्मोड़ा में उन्हें बहिन रन्दा देवी का साथ फिर मिल गया। गर्मियों की छुट्टियों में शांति निकेतन से घर आई जयंती पांडे, जयंती पंत, महान् लेखिका गौरा पांडे (शिवानी) का सान्निध्य भी उन्हें प्राप्त हो गया।

सुश्री गंगोत्री गर्ब्याल की लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है जब उन्होंने सन् 1948 में अस्कोट क्षेत्र से जिला बोर्ड की सदस्यता का फार्म भरा तो उनके विरुद्ध कोई प्रत्याशी खड़ा नहीं हुआ और वह निर्विरोध चुन ली गई। बाद में वह जिला परिषद् की उपाध्यक्ष भी बनीं और सन् 1952 तक इस पद पर रहीं। अध्यापन कार्य से समय निकाल कर वह सामाजिक कार्यों में भी रुचि लेने लगीं। सर्दियों की छुट्टियों में गांव-गांव घूम कर लोगों को इकट्ठा कर पंचायत राज के बारे में बताती थीं। उन्होंने ही पंचायत राज की भूमिका तैयार की। लोगों की समस्याएं बड़े ध्यान से सुनती थीं तथा उनके निराकरण का प्रयास करती थीं। किसी महिला की जिला परिषद् में निर्वाचित होने की उस क्षेत्र के लिए यह पहली ही घटना थी।

स्त्री शिक्षा के विरोधी भी अब उसके महत्व को समझने लग गये थे। वे कन्याओं को स्कूल भेजने लगे। विरोध करना अब छोड़ दिया था। सुश्री गंगोत्री घर-घर जाकर उन्हें मद्य निषेध के बारे में भी समझाती थीं। अल्मोड़ा में 1946 से 1952 तक महिला नार्मल स्कूल में अध्यापक रहने के बावजूद वह कई समाजसेवी संस्थाओं से भी जुड़ी रहीं।

1949-50 में जब चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया तो सीमान्त जिले की निवासी होने के कारण उस जागरूक महिला की चिन्ता स्वाभाविक थी। सीमान्तवासियों का अधिकतर व्यापार तिब्बत के साथ होता था। अब उनका व्यापार तिब्बत के साथ नहीं चीन के साथ होने लगा। भारतीय व्यापारियों पर उनका अंकुश भी बढ़ता जा रहा था। तिब्बत

में हुई राजनीतिक उथल-पुथल का कुप्रभाव सीमान्तवासियों व व्यापार पर पड़ने की आशंका को देखते हुए उन्होंने 1951 में 24 फरवरी से 26 फरवरी तक रामनगर, जिला नैनीताल में 'हिमालय सीमान्त सम्मेलन' का आयोजन किया, जिसमें हिमाचल प्रदेश, पंजाब एवं कुमाऊं व गढ़वाल के जन प्रतिनिधि शामिल हुए। तत्कालीन सांसद श्री देवीदत्त पंत तथा विधायक हर गोविंद पंत भी इस सम्मेलन में उपस्थित थे। तीन दिन के इस सम्मेलन का प्रारंभ प्रतिनिधियों एवं नागरिकों ने जुलूस निकाल कर व 'सीमांत को बचाओ', 'सुरक्षा की व्यवस्था हो', 'व्यापार बचाओ', 'सीमान्त का विकास करो' के जोशीले नारों के साथ किया। सात सदस्यों की एक कार्यकारिणी समिति गठित की गई, जिसका नाम रखा गया हिमालय सीमांत संघ। सुश्री गंगोत्री गर्ब्याल इस समिति में एकमात्र महिला सदस्य थीं।

उत्तर प्रदेश के जिला अल्मोड़ा के प्रतिनिधि का नेतृत्व किया सुश्री गंगोत्री गर्ब्याल ने और इस प्रतिनिधिमंडल की वह स्वागताध्यक्ष भी चुनी गई। इस अवसर पर उन्होंने बड़ा मार्मिक एवं सारगर्भित भाषण दिया। तिब्बत में हुई राजनीतिक उथल-पुथल का कुप्रभाव सीमान्तवासियों की सुरक्षा व व्यापार पर पड़ने की आशंका के विषय पर गंभीर चिन्ता व्यक्त की गई। सरकार से मांग की गई कि सीमान्त क्षेत्र का सर्वे किया जाय, कृषि के विकास के लिए सिंचाई आदि के साधन जुटाये जायें, सीमान्त की सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ की जाये, हिमालय में उपलब्ध जड़ी-बूटियों व औषधियों का सर्वे किया जाय, कुटीर उद्योगों की वृद्धि की जाय, ऊनी उत्पादित माल की बिक्री हेतु उचित मार्केट, भेड़पालन-चारागाह का अधिकार, पुनर्वास की व्यवस्था, विधान सभा व संसद में प्रतिनिधित्व तथा सीमान्त क्षेत्र को केन्द्रशासित क्षेत्र घोषित किया जाना आदि मांगे रखी गई।

2 जनवरी, 1952 को एक प्रतिनिधिमंडल के साथ वह दिल्ली आई और तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू से मिल कर सीमान्तवासियों की कठिनाईयों के बारे में उन्हें एक ज्ञापन दिया तथा सीमान्तवासियों की असुरक्षित एवं अनिश्चित परिस्थितियों की समस्याओं पर वार्ता हुई।

सन् 1962 में सीमान्त में बसे पिथौरागढ़ को जिले का रूप तो दे दिया गया परन्तु उसके पिछड़ेपन को दूर करने के बारे में केन्द्र में केन्द्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा कोई निश्चित नीति न होने के कारण वहां के निवासियों को कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा था। यातायात के साधन न होने के

कारण आलू एवं सेब को बाजार तक नहीं ले जा सकते थे। इन्ही मांगों को लेकर 17 जनवरी, 1972 को सुश्री गर्ब्याल एक शिष्टमंडल के साथ तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से दिल्ली आकर मिलीं। शिष्टमंडल ने अपनी मांगों को संक्षेप में बताकर आवेदन प्रस्तुत किया। प्रधानमंत्री ने उनकी बातें बड़ी ध्यान से सुनीं। उन्हें आश्चर्य हुआ कि सीमान्त क्षेत्र में अभी भी कुछ इलाके ऐसे हैं जहां आवागमन के कोई साधन नहीं हैं।

सन् 1975 में अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के उपलक्ष्य में सुश्री गंगोत्री ने पर्यावरणविद् श्री सुन्दरलाल बहुगुणा से प्रेरणा लेकर बालिका इण्टर कॉलेज गोपेश्वर की छात्राओं एवं अध्यापिकाओं के एक ग्रुप के साथ दस दिन तक गोपेश्वर से माणा गांव, बद्रीनाथ तक पैदल यात्रा की तथा गांव-गांव घूम कर अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष का महत्व, नारी शक्ति, दहेज प्रथा, कन्या विक्रय, छुआछूत, अस्पृश्यता निवारण, साक्षरता, वनीकरण, परिवार नियोजन एवं मद्यनिषेध पर प्रकाश डाला। गांव के लोगों ने, खास कर महिलाओं ने उनका अच्छा स्वागत किया। अपनी इस सफल यात्रा से वह काफी प्रभावित हुई।

1937 में अल्मोड़ा में श्री नारायण स्वामी के सर्वप्रथम दर्शन से ही सुश्री गर्ब्याल काफी प्रभावित हो गई थीं। गुजरात के कैलाश मानसरोवर यात्रियों के साथ स्वामी जी के साथ उन्होंने गर्ब्याग गांव तक यात्रा की तथा वापसी में उनसे दीक्षा ली। तभी से ही वह उनके सम्पर्क में रहीं तथा उनसे मार्गदर्शन लेती रहीं। 30 जून, 1978 को सेवा-निवृत्ति के बाद मृत्यु-पर्यंत उनका सारा जीवन नारायण आश्रम, धारचूला को समर्पित रहा।

आश्रम में रहकर जहां उन्होंने वहां की व्यवस्था, जो स्वामी जी के देहावसान के बाद छिन्न-भिन्न हो गई थी, को संभाला वहीं क्षेत्र के लोगों की भी सेवा का व्रत ले लिया। दिनांक 20 अगस्त, 1999 को इस महान् विभूति ने इसी आश्रम में अंतिम सांस ली। आज वह कर्मठ महिला यद्यपि हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनके अधूरे कार्यों को पूरा कर उत्तराखण्ड की जनता, खासकर महिलाएं उनसे आज प्रेरणा ले सकती हैं।

97, कूर्माचल निकेतन, 115, पटपड़गंज
दिल्ली-110092



सांहंसी सांरथी

- दीपांशु जैन

उज्जयिनी नगरी में बहुत पहले जितशत्रु नाम का राजा राज्य करता था। राजा बड़ा दयालु था। वह अपने सुख की चिंता छोड़, प्रजा के दुःख दूर करने में लगा रहता था। प्रजा भी राजा को चाहती थी। मंत्री और नौकर-चाकर सभी राजा को आदर की दृष्टि से देखते थे।

जितशत्रु प्रतिदिन रथ पर सवार हो, प्रजा की खोज-खबर लेने महल से निकलता था। उसके सारथी का नाम अमोघ-रथ था। वह रथ चलाने के साथ-साथ धनुर्विद्या में भी निपुण था। बड़े-बड़े धनुर्धारी उससे आंख मिलाने की हिम्मत नहीं कर पाते थे। सारथी की पत्नी का नाम था यशोमती और पुत्र का नाम अगड़दत्त। वह था भी बड़ा मनमौजी किस्म का।

संयोग की बात। अमोघ-रथ की मृत्यु हो गई। राजा जितशत्रु ने उसकी जगह दूसरे सारथी अमोघप्रहारी को नियुक्त कर लिया।

एक दिन अगड़दत्त ने अपनी मां को रोते देखा। पूछा- “मां, क्यों रो रही हो?”

मां ने कहा- “बेटा, आज अगर तुम भी रथ चलाने और धनुर्विद्या में निपुण होते, तो राजा तुम्हारे पिता की जगह तुम्हें देता। जब मैं अमोघप्रहारी को रथ हांकते देखती हूँ, तो मुझे तुम्हारे पिता की याद आ जाती है।”

अगड़दत्त बोला- “मां, हमारे रिश्ते-नाते में कोई ऐसे हैं, जो रथ चलाने और धनुर्विद्या में निपुण हो और मुझे इनकी शिक्षा दे सकते हों?”

मां ने कहा- “बेटा, कौशाम्बी में तुम्हारे पिता के एक परम मित्र दृढप्रहारी रहते हैं। रथ और धनुर्विद्या के जानकारों में उनकी बड़ी ख्याति है। तुम उन्हीं के पास जाओ।”

अगड़दत्त कौशाम्बी चला गया। वहां दृढप्रहारी से रथ हांकने और धनुष चलाने की शिक्षा पाने लगा। अगड़दत्त कुछ ही दिनों में दोनों विद्याओं में पारंगत हो, उज्जयिनी लौट आया। उसने राजा जितशत्रु के दरबार में उपस्थित हो, रथ हांकने की कला के साथ-साथ अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र का भी प्रदर्शन किया।

एक दिन दरबार में प्रजा के प्रतिनिधि ने आकर राजा से निवेदन किया- “महाराज, नगर में कोई बहुत बड़ा चोर रहता है। उससे सभी परेशान हैं। आप हमारी रक्षा करें।”

राजा ने नगर कोतवाल को आदेश दिया- “एक सप्ताह के भीतर चोर को पकड़कर मेरे सामने हाजिर किया जाए।”

अगड़दत्त ने सोचा- ‘राजा के सामने अपनी वीरता दिखलाने का यह भी एक अच्छा मौका है।’ उसने राजा से कहा - “महाराज, आप मुझे आज्ञा दें। मैं एक सप्ताह के भीतर उस चोर को पकड़, आपके चरणों में हाजिर करूंगा।” राजा ने अनुमति दे दी। अगड़दत्त दरबार के बाहर निकला। चोरों के अड्डों की तलाश करने लगा।

एक शाम अगड़दत्त वेश बदले, आम के पेड़ के नीचे फटे-पुराने कपड़ों में बैठा था। वह चोर को पकड़ने का उपाय सोच रहा था, तभी एक संन्यासी वहां आया।

संन्यासी ने अपना दंड और कमंडल एक ओर रख दिया। उसने पेड़ की कुछ टहनियां तोड़ीं। उन्हें बिछाकर बैठ गया।

अगड़दत्त ने उसे गौर से देखा- संन्यासी की नाक लम्बी और उठी हुई थी। चेहरे से कोमलता गायब थी।

संन्यासी को देखकर अगड़दत्त को उस पर शक हो गया।

उसे लगा कि यह संन्यासी नहीं है, हो सकता है, चोर यही हो। संन्यासी ने भी अगड़दत्त की जासूसी को ताड़ लिया था। कुछ देर बाद संन्यासी ने अगड़दत्त से पूछा- 'तुम कहां रहते हो? कहां जा रहे हो?'

अगड़दत्त ने उत्तर दिया- "मैं उज्जयिनी का रहने वाला हूँ। गरीब हूँ, रोजी-रोटी के लिए भटक रहा हूँ।"

संन्यासी ने उसे सांत्वना दी- "बेटे, घबराओ नहीं। मैं तुम्हें बहुत-सा धन दूंगा। लेकिन तुम्हें वही करना होगा, जो मैं कहूंगा।"

अगड़दत्त ने हामी भर दी। बातचीत में सांझ ढल आई। धीरे-धीरे रात गहराने लगी। संन्यासी ने अपने दंड का बाहरी सिरा खींचा तो खोल उतर आया। उसके हाथ में तेज धार वाली तलवार लपलपा रही थी। फिर वह नगर की ओर चल पड़ा। अगड़दत्त ने भी कपड़ों के नीचे हथियार छिपा रखे थे। वह होशियारी से संन्यासी के पीछे चल पड़ा।

संन्यासी एक बहुत बड़े महल के पास जाकर रुक गया। महल की दीवार को गौर से देखने लगा। फिर दीवार में एक जगह सेंध लगा, घुसने लायक रास्ता बना लिया और महल के भीतर चला गया।

संन्यासी ने बड़ी-बड़ी पेटियां उस रास्ते से बाहर निकालीं। अगड़दत्त को रखवाली के लिए वहां खड़ा कर, वह चला गया। थोड़ी ही देर में कुछ नौकरों को साथ लेकर आया। पेटियां उनके सिर पर रख, उनसे नगर से बाहर चलने को कहा।

कुछ दूर जाने पर पुराना बगीचा मिला। संन्यासी ने अगड़दत्त से कहा- "बेटे, कुछ देर हम बगीचे में सो लें। रात बीतने पर चलेंगे।" पेटियां रखकर सभी नौकर सो गए। संन्यासी ने सोने का बहाना किया। अगड़दत्त भी नींद का बहाना बनाकर पड़ा रहा।

थोड़ी देर बाद अगड़दत्त चुपके से उठा। वह एक पेड़ की आड़ में जा खड़ा हुआ। संन्यासी बड़ा क्रूर चोर था। वह उठा और सोये हुए नौकरों के पास गया। फिर दंड में से तलवार निकाली और उन्हें मार डाला बिछावन पर उसे न देखकर इधर-उधर खोजने लगा। पेड़ की आड़ में खड़ा

अगड़दत्त चोर की निगाह से बच न सका। चोर ने अगड़दत्त पर प्रहार किया, किंतु वह सावधान था। उसने भी फुर्ती से उसके कंधे पर तलवार से वार किया। चोर वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा। उसके शरीर से खून की धार बह चली।

कुछ देर बाद, होश में आने पर अपनी तलवार अगड़दत्त को देते हुए कहा- "बेटे, मेरी यह तलवार बहुत कीमती है, इसे लेकर इसी बगीचे में बने शमशान के पश्चिमी हिस्से में जाओ। वहां शांतिग्रह की दीवार के पास जाकर आवाज देना। वहां मेरी बहन रहती है। उसे यह तलवार दे देना। तलवार देखते ही वह तुम्हारी पत्नी बन जाएगी। फिर तुम वहां की सारी सम्पत्ति के मालिक हो जाओगे।" यह कहकर चोर मर गया।

अगड़दत्त संन्यासी की तलवार लेकर शांति-ग्रह पहुंचा। वहां उसने संन्यासी के कहने के अनुसार आवाज दी। तभी वनदेवी जैसी एक सुंदरी बाहर आई।

अगड़दत्त ने उसे संन्यासी की तलवार दिखलाई। वह उसे शांतिगृह के भीतर ले गई। अगड़दत्त से विश्राम करने को कहा। अगड़दत्त बिछावन पर सोने का बहाना कर पड़ा रहा। जब सुंदरी दूसरी ओर चली गई, तब अगड़दत्त बिछावन से उठा और एक ओर जाकर छिप गया।

अगड़दत्त ने देखा, सुंदरी ने बिछावन से कुछ ऊपर किसी यंत्र की सहायता से बहुत बड़ा पत्थर लटका रखा था। सुंदरी ने यंत्र, खींच कर उसे बिछावन पर गिरा दिया। पत्थर के गिरते ही बिछावन चूर-चूर हो गया। उसके बाद वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

तभी अगड़दत्त ने दौड़कर सुंदरी के बाल पकड़ लिए। वह गिड़गिड़ाने लगी- "मैं तुम्हारी शरण में हूँ।"

अगड़दत्त उसे राजदरबार में ले गया। राजा को सौंपते हुए उसने सारी घटना ज्यों की त्यों कह सुनाई। सभी नगरवासियों ने मरे हुए चोर को देखा। राजा ने चोर की बहन को आजीवन कारावास की सजा दी और अगड़दत्त को अपना सारथी बना लिया।

राज स्टेशनर्स, पचपट्टाड़ रोड,
भवानीमंडी (राज० 326502)



“सुन यशोदा के श्याम”

—के० के० शर्मा

गोपी: माखन लूटे हण्डिया फोड़े,
चाहे रास्ता कर दे जाम।
मैं न शोर मचाऊँगी,
यदि चोर मिले घनश्याम॥2॥
धुन मुरली की मुझे सुना दे,
बस एक बार मुस्का दे कान्हा।
नाम कहीं तेरा न लूँगी,
यदि ठुमका एक लगा दे कान्हा॥2॥
चाहे सासू मारे गारी दे,
मैं तो भरूँ न एक छदाम।
माखन लूटे हण्डिया फोड़े,
चाहे रास्ता कर दे जाम।

कृष्ण: गोपियन की इच्छा वरने को,
मैंने ब्रज में लिया अवतार।
रे गोपी बरसाने की,
रे छोटी बरसाने की।

गोपी: राधा जैसी सखी बना ले,
जो माँगे मैं दे दूँगी।
मेरे साथ भी रास रचा ले,
प्राण माँगे मैं दे दूँगी॥2॥
मैं हूँ तेरी प्रेम दीवानी,
तुम ही मेरे प्राण।
माखन लूटे हण्डिया फोड़े,
चाहे रास्ता कर दे जाम।

कृष्ण: गोपी-कृष्णा कह के पुकारूँ
दूँ वृषभान लली-सा प्यार
री छोटी बरसाने की,
री गोपी बरसाने की।

गोपी: मेरे कन्हैया मनचाहा कर,
मुझ गोपी की सुन घनश्याम
सब कहें मुझे भी गोपी-कृष्णा
जैसे कहते राधे-श्याम॥2॥
काम नहीं ये इतना मुशिकल,
सब कहें तुझे भगवान
माखन लूटे हण्डिया फोड़े,
चाहे रास्ता कर दे जाम।

कृष्ण: प्रेम डोर से जो बंध जाता,
मैं उन सबको देता वार।
न करता देर सखे,
लगा ले टेर सखे।

गोपी: रे नन्द भवन के छोरे,
यशोदा के घनश्याम।
तू तो मन में बसे रे श्याम
आ के हाथ मेरा ले थाम।
सुन यशोदा के श्याम॥

आर.जेड-2000-सी/25, (एफ/एफ)

तुगलकाबाद विस्तार,
नई दिल्ली-110019

संवैधानिक मान्यता के बावजूद, उपेक्षा की शिकार-हिन्दी

पालिका समाचार

-प्रो० योगेश चन्द्र शर्मा

स्वतंत्रता-संघर्ष के दौरान ही हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने यह भलीभांति समझ लिया था कि सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में बांधने के लिए एक ऐसी कड़ी भाषा का होना आवश्यक है, जिसके माध्यम से देशवासी आपस में एक दूसरे से विचारविमर्श कर सकें और राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित समस्याओं का समाधान ढूंढ सकें। स्पष्ट ही यह भाषा गुलामी की प्रतीक अंग्रेजी नहीं हो सकती थी। सीमित दायरा होने के कारण अन्य प्रान्तीय भाषाएं भी यह स्थान ग्रहण नहीं कर सकती थी। इसलिए राष्ट्रीय स्तर के लगभग सभी नेता इस बात पर सहमत थे कि देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को ही राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाए।

अपने इस विचार को क्रियान्वित करने तथा उसे संवैधानिक स्वरूप देने के लिए ही तत्संबंधी प्रस्ताव श्री गोपाल स्वामी आयंगर द्वारा संविधान-सभा में प्रस्तुत किया गया, जिसे सभा ने 14 सितम्बर 1949 को पारित किया। यही पारित प्रस्ताव हमारे संविधान के भाग सत्रह में राजभाषा शीर्षक के अन्तर्गत विद्यमान है। 14 सितम्बर को पारित होने के कारण ही इस दिन को देश में हिन्दी-दिवस के रूप में मनाने की परम्परा बनी हुई है।

भाग सत्रह में अनुच्छेद 343 (1) के अन्तर्गत हिन्दी को राजभाषा बनाने की बात इन शब्दों में कही गयी- 'संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। 'संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंको का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा।..... (2) खंड एक में किस बात के होते हुए भी इस संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि के लिए संघ के इन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग की जाती रहेगी, जिनके लिए ऐसे प्रारम्भ के ठीक पहले वह प्रयोग की जाती थी- 'परन्तु राष्ट्रपति उक्त कालावधि में आदेश द्वारा संघ के राजकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के साथ साथ हिन्दी भाषा का तथा भारतीय अंको के

अन्तर्राष्ट्रीय रूप के साथ-साथ देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।"

संविधान के इस अनुच्छेद का प्रस्ताव किसी हड़बड़ाहट या जल्दबाजी में पारित नहीं किया गया। इस पर काफी विस्तार से विचारविमर्श किया गया। इस पर लगभग तीन सौ संशोधन के प्रस्ताव पेश किये गए। तीन दिन तक विस्तार से इन पर बहस की गयी और अन्त में दो के अतिरिक्त सभी संशोधन-प्रस्ताव वापिस ले लिये गए। इन दो में एक प्रस्ताव था कि हिन्दी की जगह 'हिन्दुस्तानी' शब्द का प्रयोग किया जाए तथा दूसरा प्रस्ताव था कि देवनागरी की जगह फारसी लिपि रखी जाए। इन दोनों संशोधन-प्रस्तावों पर मतदान हुआ। मतदान हाथ उठाकर हुआ। प्रथम के पक्ष में केवल चार सदस्यों ने तथा दूसरे के पक्ष में बारह सदस्यों ने अपने हाथ उठाये। फलस्वरूप ये संशोधन भी गिर गए। बाद में जब श्री गोपाल स्वामी आयंगर द्वारा प्रस्तुत संवैधानिक प्रस्ताव पर मतदान हुआ तो उसके पक्ष में 312 सदस्यों ने मतदान किया। कुल सदस्य थे 324 । इस प्रकार प्रबल बहुत से संविधान-सभा ने हिन्दी को राजभाषा बनाने वाले इस अनुच्छेद का समर्थन किया।

इस अनुच्छेद के अन्तर्गत पहली कार्यवाही की गयी संविधान के अधिकृत हिन्दी अनुवाद की। इस संदर्भ में 17 सितम्बर 1949 को श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने संविधान-सभा में एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसे सभा ने इस रूप में पारित किया- यह संविधान-सभा सर्वसम्मति से अपने अध्यक्ष (डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद) को अधिकार देती है और उनसे निवेदन करती है कि संविधान का हिन्दी अनुवाद करवाने के लिए आवश्यक कार्यवाही करें और अपनी संविधान-सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार से उस 26 जनवरी 1950 से पूर्व प्रकाशित करवा दें। साथ ही इस बात की भी प्रबन्ध करें कि भारत की अन्य प्रमुख भाषाओं में भी, जिन्हें वे उचित समझे, संविधान का अनुवाद करवाकर प्रकाशित करवाने की व्यवस्था करें।

संविधान-सभा के सदस्यों का यह स्पष्ट और निश्चित विचार था कि 15 वर्ष उपरान्त भारतसंघ की राजभाषा हिन्दी हो जाएगी और तब न्यायिक कार्य सहित सभी कार्य हिन्दी में होंगे। उस समय संविधान का हिन्दी-संस्करण ही काम में आएगा, अंग्रेजी संस्करण नहीं। इसीलिए यह प्रस्ताव पारित किया गया। डॉ. राजेन्द्रप्रसाद का सोच इससे भी आगे था। उनका विचार था कि संविधान के हिन्दी अनुवाद को पूर्णतः प्रमाणिक बनाने के लिए उस पर भी संविधान-सभा की स्वीकृति उचित होगी इसलिए उन्होंने तत्काल हिन्दी अनुवाद के लिए एक समिति बनाने के निर्णय की घोषणा की और संविधान-सभा के ही एक सदस्य श्री घनश्यामसिंह गुप्त को उसका अध्यक्ष घोषित किया। संविधान-सभा ने अपने अध्यक्ष के इस निर्णय को तत्काल स्वीकार कर लिया। इस समिति में सभी राज्यों के भाषा विशेषज्ञों को भी सम्मिलित किया गया।

संविधान के हिन्दी अनुवाद के लिए सर्वप्रथम उसके तकनीकी शब्दों के ऐसे हिन्दी शब्द ढूँढे गए जो यथा सम्भव अन्य भारतीय भाषाओं में एक जैसे हों, ताकि विभिन्न भाषाओं में संविधान का अनुवाद करते समय उन शब्दों में अधिक अन्तर न हो। इसके बाद संविधान का हिन्दी संस्करण तैयार किया गया। 24 जनवरी 1950 को संविधान-सभा के सदस्यों ने संविधान की तीन प्रतियों पर हस्ताक्षर करके उन तीनों को प्रमाणित किया। इनमें एक प्रति अंग्रेजी में हस्तलिखित थी, दूसरी प्रति अंग्रेजी में मुद्रित थी और तीसरी प्रति हिन्दी में हस्तलिखित थी। इस प्रकार संविधान की ये तीनों प्रतियां प्रमाणिक और वैधानिक दृष्टि से मान्य हैं।

संविधान व्यवस्था के बावजूद हिन्दी आज तक भारत संघ की राजभाषा नहीं बन पायी है। वहां आज भी अंग्रेजी का ही बोलबाला है और हिन्दी कहीं कहीं डरी, दुबकी और झिझकी सी नजर आती है। 15 वर्ष की अवधि कभी की समाप्त हो चुकी है। संवैधानिक संशोधन द्वारा उस अवधि को समाप्त करके उसे अनिश्चित काल तक के

लिए कर गया। निश्चित ही इसमें संविधान निर्माताओं का कोई दोष नहीं। उनकी नियत या निर्णय में कहीं कोई खोट नहीं था। खोट रहा उच्चपदस्थ प्रशासनिक अधिकारियों तथा राजनेताओं की नियत में।

प्रशासनिक अधिकारियों को अंग्रेजी में काम करने की आदत तो थी ही, साथ ही ऐसा करके उनके अहम् को सन्तुष्टि भी मिलती थी। सामान्य जनता से अलग और ऊपर बने रहने की अपनी प्रवृत्ति को वे समाप्त करने के लिए तैयार नहीं थे। राजनेताओं का भी इसमें दोष कम नहीं रहा। अपने अपने प्रान्तों में अपनी विशिष्टता बनाये रखने के लिए उन्होंने भाषा के आधार पर लोगों में अलगाव के भाव उत्पन्न किये। इसके लिए उन्होंने कहीं जाति या धर्म को आधार बनाया और कहीं भाषा को।

प्रशासनिक अधिकारियों तथा राजनेताओं द्वारा डाली गयी बाधाओं के कारण हिन्दी अब तक अपना उचित स्थान ग्रहण नहीं कर पायी है। इसमें कोई शक नहीं कि इन दिनों दक्षिण भारत सहित सम्पूर्ण देश में हिन्दी का प्रचार प्रसार काफी बढ़ा है, मगर दूसरी तरफ यह भी सच है कि जन-साधारण में यह भावना घर कर चुकी है कि बिना अंग्रेजी के ज्ञान के उनके बच्चे उच्चपद प्राप्त नहीं कर सकेंगे। इसीलिए इन दिनों अंग्रेजी के ज्ञान के उनके बच्चे उच्चपद प्राप्त नहीं कर सकेंगे। इसीलिए इन दिनों अंग्रेजी माध्यम वाली शिक्षण संस्थाओं की लोकप्रियता काफी बढ़ रही है। समस्या के समाधान के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि भारत संघ में उच्च पद प्राप्त करने के लिए हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान आवश्यक हो। इसके साथ ही अंग्रेजी के ज्ञान की अनिवार्यता समाप्त की जाए तथा संघीय लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी या प्रान्तीय भाषाएं हों, अंग्रेजी नहीं।

10/611, मानसरोवर,
जयपुर-302020 (राज०)

सुख का सुराग

- डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

उसका नाम हाहासेन था। बचपन से ही वह असंतोषी किस्म का इन्सान था। खाना, पढ़ना या पहनना हो उसे किसी चीज में कभी तृप्ति ही न होती थी। उसने बहुत ज्ञान अर्जित करने की चाहत में बहुत भाषाएं सीखीं। उस ज्ञान का प्रयोग कर-कर उसने बहुत धन कमाया। किसी बड़ी चाहत में उसने दूसरी जाति में विवाह कर लिया। उससे भी बड़ी चाहत के लिए उसने अपना धर्म तक परिवर्तन कर दिया। एक दिन एक ज्ञानी उससे पूछ बैठे-

'हाहासेन! अपने नाम के अनुसार तुममें यह पाने का हा-हा कार कब तक मचा रहेगा?'

'जब तक अपने गतंव्य तक नहीं पहुँच जाऊंगा संत प्रवर।'

'लेकिन तुम्हें मालूम है तुम्हारे पास भाग्य का थैला तो केवल दस किलोग्राम की सामग्री का है..... और तुमने चाहतो के हीरे-मोती दस क्विंटल के एकत्रित कर लिए हैं.... आर-पार में विवशताओं व समय (कालचक्र) का गहरा समुद्र है.... तुम भला उससे पार निकलोगे कैसे?

उस ज्ञानी संत के विचारों ने उसे सोचने के लिए विवश कर दिया। वह सोचने लगा कि इतना अटकने के बाद भी उसे जीवन का असली सुख कहां मिला। उसने तब परिवर्तित धर्म के ईश्वर की कठोर साधना की। जब वे प्रकट हुए तो उसने पूछा।

'महाप्रभु! मैंने असंभव को भी संभव कर दिखाया है लेकिन मुझे मनचाहा सुख क्यों नहीं मिला?

'देखो वत्स, तुमने क्योंकि यह सब कामनाओं व इच्छाओं से वशीभूत हो, अमर्यादित होकर किया है। नदी जब मर्यादा में रहती है वह परम पावन, पूज्य, सर्जक व परोपकारी होती है। किंतु अमर्यादित होते ही वह स्वयं व सबके लिए उग्र व हिंसक-विध्वंसक हो जाती है। अग्नि जब सकारात्मक होती है तो ऊर्जा व प्राणदायिनी होती है.. किंतु जब नकारात्मक होती है तो प्राणघातक हो जाती हैं। तुमने किसी जीव न पक्षियों को अंतर्जातीय विवाह करते देखा? पेड़-पौधे या फूल को मेरे प्रतिकूल पनपते देखा? जिसे मैंने जहां, जो बनाया है यदि वह वहीं मर्यादापूर्वक रहे तो उसे सुख ही सुख मिलेगा। और जो बहुत पाने की चाह में अपनी प्रकृति, प्रवृत्ति व संस्कारों से छल करेगा.... अमर्यादित होता रहेगा। उसे सच्चा सुख कैसे मिलेगा? प्रवृत्ति व प्रकृति का पालन व उल्लघन ही सुख-सुख का मूल है।

आज उसे असली सुख का सुराग मिल सका था।

"अभिव्यक्ति", 167, गढ़ विहार (IIP)
देहरादून-248005 (उत्तराखंड)

कौन महत्वपूर्ण ?

-डॉ० दिनेश चमोला “शैलेश”

महर्षि शतायु महाराज का एक सुंदर पुष्पोद्यान था। उसमें भांति-भांति के रंग-बिरंगे मोहक पुष्प तो थे ही, जड़ी-बूटियों के दुर्लभ पेड़ भी थे। महर्षि शतायु योगाभ्यास कर कुछ पल वहां ‘साधना करते तो मानो उद्यान के दिव्य पुष्प व लताकुंज धन्य हो उठते। एकांत के क्षणों में महर्षि वहां घंटों तक साहित्य साधना भी करते।

एक दिन महर्षि ब्रह्म वेला के अपने नित्य कर्म से निवृत्त हो उद्यान की मोहक दूर्वा में नंगे पांव आनंद में डूबे टहल (भ्रमण कर) रहे थे तो अपलक उन्होंने देखा कि उद्यान के एक छोर पर एक बीज व एक पेड़ के मध्य गरमागरम बहस चल रही थी। दोनों एक दूसरे से महत्वपूर्ण अपना अस्तित्व करार रहे थे। पेड़ कहता-

‘जब मैं हूँ.... तभी तुम हो..... इसलिए मैं महत्वपूर्ण हूँ।

‘मैं न होता तो तुम्हारा कोई अस्तित्व ही न होता- इसलिए तुमसे महत्वपूर्ण मैं हूँ।’ बीज ने चुनौती दी।

‘न पेड़ महत्वपूर्ण है, न बीज ही... मेरे ही कारण तुम दोनों हो इसलिए सबसे महत्वपूर्ण मैं हूँ...।’ अचानक धरती ने प्रकट हो कहा।

‘लेकिन तुम सब से महत्वपूर्ण हम हैं..... जल और वायु। यदि हम न हों, न बीज अस्तित्व में आ सकता है... न पेड़ ही और न धरती ही कुछ अपने में उगा व खिला सकती है.... इसलिए हम महत्वपूर्ण हैं।

यह सुन विवाद और गहरा गया। सभी को लगा कि सभी के तर्क सार्थक हैं..... निराधार नहीं। लगभग अनिर्णय की स्थिति देख सभी मन ही मन क्षुब्ध हो उठे। महर्षि शतायु ने गंभीर हो कहा-

‘हे जनार्दन। लीलाधारी प्रभु ने सहकारिता व सहयोग के आधार पर इस मृत्युलोक रूपी सृष्टि की रचना की है। स्वतंत्र रूप से सभी का अस्तित्व अधूरा व अपूर्ण है.... उनमें पूर्णता तभी आती है जब उनका अवदान संयुक्त होकर एक हो जाता है। सबकी शक्ति व सहयोग के मेल जोल से यह संसार का कर्म पूर्णता प्राप्त करता है। एक विशाल वायुयान में लघुतम धुरी से लेकर बड़े (वृहद्तम) उपकरणों तक का समान महत्व है। उनमें से एक भी अवयव (वस्तु) की अनुपस्थिति में कर्म अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकता।

इस संसार के यान को ऊर्जावान बनाने में आप सबका समान योगदान है। इसलिए आप सभी अपने-अपने अस्तित्व में समान रूप से महत्वपूर्ण है.... कोई, किसी से किसी भी रूप में कम नहीं हैं।’

यह सुन सभी का अहम् संतुष्ट हो गया। उद्यान फिर मोहक सुगंध बिखेरने लगा।

“अभिव्यक्ति”, 167, गढ़ विहार (IIP)
देहरादून-248005 (उत्तराखंड)



अधूरापन अभाव एवं असन्तोष से कैसे बचें

- ओ. पी. शर्मा

मनुष्य का यह स्वभाव ही है कि वह अपनी स्थिति, अपने पद, अपनी सामाजिक स्थिति, अपने गुण या अभावों की तुलना अपने से अच्छी सामाजिक स्थिति और उच्चपद, उच्चयोग्य तथा आर्थिक सम्पन्न लोगों से ही करते हैं।

सभी के हिस्से में उच्च स्थिति, उच्चपद, सुन्दर वस्तुएं तथा नाना समृद्धियां नहीं आ सकती, तथा जिन लोगों से तुलना करते हैं उनके प्रति ईर्ष्याभाव और उत्पन्न कर लेते हैं साथ ही अकेले में अपने को तुच्छ, निर्बल, दीनहीन समझने लगते हैं- स्वाभाविक है कि ऐसी स्थिति में ईर्ष्यारूपी अग्नि से व्यक्ति जलता रहता है कुछ लोग तो अपनी ईर्ष्यारूपी अग्नि को उन उच्च समृद्ध व बड़े ओहदे वालों के सामने ही सार्वजनिक कर देते हैं- हाल ही में एक सहायक अभियंता पड़ौस में स्थानान्तरित हो कर आये।

वे अपने घर का सामान ट्रक द्वारा उतरवा कर-घर में व्यवस्थित करवाने में लगे थे, सहायक अभियंता की उम्र रही होगी यही 32-33 वर्ष, पड़ौस से आयी औरत हैरान थी कि अरे इनके तो केवल दो पुत्र ही है, कार लम्बी अच्छी नई भी है.ए.सी. भी. टीवी भी, बड़ी स्क्रीन वाला एल.सी. डी-पड़ौसन से रहा नहीं गया वह तुरंत बोल उठी कि देखो आपने तो छोटी सी उम्र में सब सुख सुविधा का सामान जुटा रखा है- मेरा बेटा तो 45 वर्ष का हो गया अभी कोई सामान नहीं जुटा पाया, इसी प्रकार गाड़ी भी अच्छी है नव-आगन्तुक सहायक अभियंता उसकी पत्नी- पड़ौस की इन औरत के कथन से बड़े आहत हुए- एवं दुखी भी। सहायक अभियंता का कथन था कि कितनी मेहनत से पिछले 10-12 वर्षों से हम पति-पत्नी (पत्नी भी सरकारी नौकरी करती है), कितना कष्ट उठाकर-ये थोड़ा बहुत न्यूनतम आवश्यकता का सामान जुटा पाये है पर्सनल लोन बैंक का बाकी है, कार की लोन किस्त चल रही है लंच के समय से ही बच्चें अकेले ही कमरे में कैद कर जाते हैं जो शाम को 6-6:30 बजे आकर ही आजाद करते हैं, कितनी भागम-भाग व भागदौड़ रहती है मशीनी जिन्दगी जी रहे हैं तीन वर्ष तक अलग अलग अकेले भी रहें हैं, फिर परिवार समाज भी बहुत आशा किए रहता है- कहीं भी दान पुण्य आर्थिक सहयोग की बात भी चलती है तो 1,000 की रसीद से कम की बात नहीं की जाती- समाज के उत्सवों में भी ऐसी ही बड़ी उम्मीदें उनसे रखी जाती है- और हम है कि हमारी तमाम मुश्किलों, कठिनाईयों को सीने में दफन कर सबके सम्मुख मुस्कराते हुए ही दिखाना चाहते हैं- मीठा ही बोलना चाहते हैं सद्-व्यवहार का क्या यही परिणाम होता है उन्हें लगता है कि हम तो रोज ही मेवा मिष्ठान उड़ाते हैं, फल खाते हैं उन्हें क्या पता कि कई बार सिर्फ ब्रेड खाकर ही दिन गुजारना पड़ता है। कपड़े बिना प्रेस किए हुए पहनना पड़ता है। यदि कभी नया कपड़ा पहन लिया तो पड़ौसी को लगता है कि इनके बक्सों में कपड़ों के ढेर है, हकीकत यह है कि दोनों की भाग दौड़ की व्यस्त जीवन में किसी कपड़े के बटन टूटे हुए, कोई मैला पड़ा है, कोई प्रैस के लिए रखा है- ऐसे में जो भी कपड़ा पहनने को मिले पहनलिया ऑफिस तो जाना ही पड़ता है न। इस प्रकार हमारे यहां वैभव का भंडार,

समृद्धि इन्हें नजर आती है- खाने में मावे, मिष्ठान, मेवे, फल- तथा अपने को ये निपट गरीब, रूखी-सूखी रोटियाँ खानेवाले- समझते हैं- ये सोचते हैं कि काश-हम भी ऐसे ही ऊँचे ओहदे पर होते, अमीर होते, दोनो पति-पत्नी नौकरी में होते तथा हमारे केवल सुन्दर पुत्र ही होते, अनमोल बेटी न होती, नयी बड़ी कार, ए.सी. होते, यह स्थिति निसंदेह ईर्ष्या ही तो बतला रही है साथ ही स्वयं निम्न-मानसिकता की स्थिति भी उत्पन्न कर रही है, हीनत्व की भावना भी उत्पन्न कर रही है।

आप एक पक्षीय होकर इस स्थिति से ग्रसित हो रहे हैं- उनकी इस स्थिति के लिए आप इनके उच्च रहन सहन, नौकरी अच्छे कपड़े, कार एवं सुन्दर पुत्रों को ही महत्व दे रहे हैं एवं अपने को हीन तथा छोटा महसूस कर रहे हैं-

अभाव, बुराईयां, कमजोरियां किस व्यक्ति में नहीं होती, इस दुनियां में सम्पूर्ण कौन है? यह कहां का तरीका है कि आप अपनी अच्छाईयां, उत्तमगुणों को छोड़ कर अपने में निहित शिवसंकल्प शक्ति को किनारे कर, दूसरे की प्रत्यक्ष समृद्धि गुणों को बढ़ा चढ़ाकर देख रहे हैं।

दूसरे का धन आपको अधिक दिखाई दे रहा है, दूसरे के बच्चे, पत्नी भी आपको सुन्दर, स्वस्थ एवं गुणों से युक्त, कुशाग्र बुद्धि के नजर आते हैं और अपनी शीला सर्वगुण सम्पन्न, संतोषी एवं अपनी धर्म पत्नी में अवगुण दिखाई देने लग जाते हैं उनके बनाये हुए भोजन, सफाई, शिष्टाचार, सदाचार एवं सद्व्यवहार में कोई विशेषता नजर नहीं आती है कमियां ही दिखाई देती हैं हम दूसरों की नौकरी, धन, व्यवहार, बच्चों की बड़ी इज्जत कर रहे हैं।

वहीं अपने के सद्व्यवहार को ही तुच्छ, साधारण तथा बेकार, अपनों को ही कितनी निराशा एवं हीनता की भावना दे रहे हैं, अपने परिवार के प्रति कितना निर्दयता-पूर्वक व्यवहार, अत्याचार कर रहे हैं- ऐसा वे समझ ही नहीं पाते।

वस्तुतः हम सभी जीवन के बाह्य पक्ष को ही देखते हैं- संसार की कोई भी वस्तु न तो एक जैसी है न ही एक दूसरे के सभी गुण लिए हुए है- कोई देखने में सुन्दर है कोई - भाव से, कोई कर्म से सुन्दर है इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य में भी कोई न कोई अभाव भी अवश्य ही होगा- एक अच्छाई है तो कई बुराईयां भी हो सकती हैं- यह स्थिति पशु पक्षियों की भी है- मोर के पंख कितने सुन्दर परन्तु

पांव देख कर वह कितना दुखी, हाथी की चाल शानदार पर आलस्य निन्दनीय है- परन्तु पशु पक्षी सभी सदैव प्रसन्न रहते हैं- मोर अपने पंख फैला कर नृत्यकर-अन्यों के नैराश्य भाव को दूर करता है, सभी पक्षी भी खेलते कूदते कलरव करते हैं मधुर संगीत उत्पन्न करते हैं- सभी में आशा का नवसंचार करते रहते हैं।

मानव मात्र की स्थिति भी कमोवेश वैसी ही है- कोई शरीर से स्वस्थ है तो सौन्दर्य नहीं, सौन्दर्य है तो शक्ति नहीं, शक्ति वाले के पास चरित्र नहीं - किसी का पद उच्च है तो पारिवारिक अड़चनों में आकंठ डूबा हुआ है- किसी के बच्चे का विवाह नहीं हो रहा है, किसी के बच्चे के विवाहित होने पर चिंता बनी हुई है कि छुटकारा कैसे हो, किसी के बच्चे नहीं हैं, किसी-किसी को अनेकों बीमारियां लगी हुई हैं- कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा- जिसके जीवन में कोई अभाव, असंतोष न होगा।

मानव जीवन जीना इतना आसान भी नहीं है, कभी रहाभी नहीं, जिस तरह से धरती पर कहीं समतल-कहीं पहाड़, कहीं पानी, कहीं कांटे तो कहीं हरियाली कहीं उसी हरियाली आच्छादित वन में विष वाले पौधे तो कहीं समुद्र-इस तरह अपने अभावों को देखते रह कर, अपनी स्थिति को दोष देना, कुढ़ना अन्यों से ईर्ष्या करना- स्पष्टतः अपनी उन्नति में स्वयं ही बाधा उत्पन्न करना है, अपनी दुर्बलताएँ देखते रहने से दोषों में वृद्धि ही होती है- व्यक्ति ईर्ष्या की अग्नि में जल कर तात्कालिक दूसरे को हानि भलेही पहुँचा दे- स्वयं का भला कभी नहीं कर सकता- हां उनसे सीख अवश्य ले सकता है।

हां, अपनों से उच्च, समृद्ध लोगों की तुलना में उनकी ऊँचाई पर पहुँचने के लिए उच्च शिक्षा, व्यापार-व्यवसाय के गुण, उनकी नीति का पाठ उनके परिवार की श्रेष्ठ भूमिका इत्यादि व्यवहार में अपना कर अपने बच्चों को भी 'शिक्षा लोन' इत्यादि से उच्च शिक्षा दिलाने की प्रेरणा लेना, अपने बच्चों को सदैव प्रेरित रखना, उनका हौसला बढ़ाना कि समय सदैव एक सा नहीं रहता" की सीख देकर कठिन समय को पार करने के लिए-प्रोत्साहित करना अच्छी सीख देना-सर्वोत्तम है अपने को कमजोर न समझकर ईश्वर द्वारा दी गई शक्तियों को निश्चय पूर्वक ऊँचा उठाकर शुभ चिन्तन

और दृढ़ संकल्प शक्ति द्वारा विकसित करना, अपने सदगुणों और सद्प्रवृत्तियों को विकसित कर अधिक धन कमाने के लिए बचे हुए समय को और अच्छा उपयोग कर आमदनी बढ़ा सकते हैं- बहुत से गरीब तथा कमजोर वर्ग होनहार बच्चे अपने विद्यार्थी काल में ही 'ट्यूशन' कर अपनी पढ़ाई पूरी करते हैं कभी अपने माता-पिता पर किसी तरह का बोझ नहीं बने, यहां तक कि कुछ बच्चे ग्रीष्म कालीन अवकाश के दिनों में भी कुछ कार्य कर आय अर्जित कर अपनी आगे की फीस, पुस्तक, कापियां इत्यादि खर्च की व्यवस्था कर लेते हैं- उनके माता-पिता अभिभावक भी इनकी इस मेहनत के गुण को, समय के सदुपयोग को अच्छा ही मानते आये हैं उन्हें इससे बड़ा सकून मिलता है। आर्थिक सहयोग के साथ स्वावलम्बन की सीख भी मिलती है।

अभाव एवं असंतोष को दूर करने का सही तरीका यह है कि आप अपने बराबर वालों तथा अपने से नीचे वालों की स्थिति भी देखें। इस संबंध में कहा गया है कि एक बार एक व्यक्ति बहुत भूखा था-पास में पैसा भी बहुत कम, दिन चढ़ गया सोचा चलो मूली ही लेलीजाए- उसने मूली खरीदी, "पेडू" रखा तथा पत्ते नीचे गिराते हुए चल रहा था मूली का पेडू खाते खाते वह अपने इन दुर्दिनों को, अभावों को कोसता जा रहा था तथा रास्ते में पड़ने वाले बड़े भवनों वालों के प्रति ईर्ष्या प्रकट करता जा रहा था- इतने में पीछे से कोई आवाज सी सुनाई देने पर पीछे मुड़कर देखा तो एक व्यक्ति उसके पीछे पीछे मूली के पत्ते जमीन से उठाकर खा रहा था।

उसने पुनः ध्यान से देखा कि वह उसी के गिराये हुए पत्ते खा रहा था उसने अपने को भाग्यशाली समझा कि चलो मैं उस व्यक्ति से तो बहुत ठीक हूँ- असंतोष काफी कम हुआ-कहने का तात्पर्य यह है कि आगे बढ़ने के लिए-उन्नति के लिए मेहनत से संघर्ष करना चाहिए- अपनी उन्नति के लिए-भय, ईर्ष्या, क्रोध, आलस्य को अवश्य त्यागना होगा, वहीं अपने में छिपे हुए गुणों को पहचान कर उन्हें इतना संवारे कि आपका व्यक्तित्व भी प्रभावशाली बनजाए "कौन कहता है कि आसमान में छेद नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो" सुख समृद्धि के विचारों सहित उसी दिशा में कार्य में जुट जायें, सफलता अवश्य मिलेगी।

एस-5, कांता खतूरिया कॉलोनी,
बीकानेर-334003 (राजस्थान)



दंत स्वास्थ्य: क्या व कैसे?

- आर. बी.एल. गर्ग

एक सुन्दर महिला के आकर्षक व्यक्तित्व की कल्पना के साथ ही उसकी उल्लासयुक्त मुस्कान हम सभी के मस्तिष्क में उभर आती है। निसन्देह मुस्कान चेहरे को दीप्तिमान बनाती है, जो बिना सुन्दर दन्तपंक्ति के संभव नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के हाल के एक अध्ययन के अनुसार दुनिया की अधिक से अधिक जनसंख्या दंत स्वास्थ्य के प्रति अनमयस्क ही है। दांत एवं मसूड़ों के स्वास्थ्य के प्रति हमारी अनमयस्कता दांतों को गँवा देने के लिए ही नहीं अनेक अन्य शारीरिक बीमारियों के लिए भी उत्तरदायी होती है। दांतों की देखभाल केवल दांतों की उम्र व सुन्दरता के लिए ही नहीं अपितु सामान्य स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। अमेरिकन जनरल ऑफ प्रीवेन्टिव मेडीसन के दिसम्बर 2005 के अंक में इस बात का खुलासा किया है कि अस्वस्थ मसूड़े अन्य रोगों के अलावा हृदय रोग के लिए भी उत्तरदायी हैं। यहां तक कि मधुमेह को भी अस्वास्थ्यपूर्ण मसूड़ों से सम्बन्धित किया गया है। निम्नांकित दांतों सम्बन्धी समस्यायें प्रमुख हैं जो कि अज्ञानता, अशिक्षा एवं अनमयस्कता के कारण हमें अपने जीवनकाल में भोगनी पड़ती हैं।

1. दुर्गन्धपूर्ण श्वसन (Bad Breath)
2. दंत छिद्र (Cavities)
3. शुष्क मुख (Dry mouth)
4. मुख शोथ (Mouth Sores)
5. मुख कैंसर (Oral Cancer)
6. अन्य (Others) यथा दंत क्षय (tooth erosion), दंत शूल (toothache), दंत टीस (Cold sores) आदि-आदि।

हाल के एक अध्ययन के अनुसार भारत में 6 से 12 नई दिल्ली पालिका समाचार

वर्ष के सत्तर प्रतिशत बालक दांत सम्बन्धी रोगों से पीड़ित है जिनमें से अस्सी प्रतिशत दंत क्षरण (Dental caries) के शिकार है। इनके मूल में निम्न आर्थिक, सामाजिक स्तर हो सकता है लेकिन दोषपूर्ण खाने-पीने की आदतें व दांतों की अपर्याप्त देखभाल, भी कम उत्तरदायी नहीं। दांत क्षय की समस्या अमेरिका, कनाडा, फ्रांस व स्विट्जरलैण्ड में भी देखी जा सकती है जो अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न राष्ट्र है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में तो औसत आय स्तर का व्यक्ति अपने दांतों की सुरक्षा के लिए दंत चिकित्सक के पास जाने की स्थिति में नहीं होता यद्यपि वहां सामान्य दंत परीक्षण से लेकर दंत आरोपण (Dental implant) तथा नवीनतम दंत श्वेतता (Cosmetic whitening) पर प्रतिवर्ष 70 अरब डालर व्यय किया जाता है। यहीं बात ब्रिटेन, फ्रांस व स्विट्जरलैण्ड आदि देशों के बारे में कही जा सकती है, जहां दंत चिकित्सा महंगी होने के कारण यह आम व्यक्ति के लिए सुलभ नहीं है। भारत में दंत चिकित्सा बहुत महंगी न होते हुए भी 45 से 75 व्यक्ति दांत सम्बन्धी रोगों के शिकंजे में है जिनमें सबसे अधिक बालक है।

कारण: दांत खराब होने, क्षय होने सड़ने या दर्द पैदा करने के कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार है:-

1. दांत सम्बन्धित स्नायु तथा रक्त वाहिकायें रूट कैनल से पल्प में प्रवेश करती है। दांत में कीड़ा लग जाने पर उस कीड़े से तेजाब बनने के कारण दांत खोखला होकर यह कीड़ा पल्प तक पहुँचने लगता है तब असहनीय पीड़ा होती है और मुंह सूज जाता है। इसका प्रमुख कारण दांतों की देखभाल न करना है।
2. अधिक गर्म व अधिक ठण्डे पेय का सेवन, अधिक चाकलेट, आइसक्रीम, मिठाई, पान, सुपारी व तम्बाकू सेवन दांत क्षय के उत्तरदायी घटक है।
3. पायरिया या पीरियोडॉन्टिटिस, जैसे क्षयकारी रोग भी दांतों के प्रति लापरवाही के कारण होते हैं। जैसे- ठीक प्रकार व नियमित ब्रश न करना, धूमपान करना या ठीक प्रकार से भोजन न करना, जीवाणु संक्रमण आदि।
4. दांतों को ऑलपिन, माचिस की तीली आदि से कुरेदते रहना, जिसके फलस्वरूप उसमें छेद हो जाता है तथा दांत निकालना पड़ता है।

क्या करें- दांत और मसूड़े हमारी चमड़ी के हिस्से हैं यद्यपि जिन तत्वों से ये बने हैं वे भिन्न हैं। मसूड़े मूलतः संवहनीय

(Vascular) होते हैं। चूंकि दांत मसूड़ों से जुड़े हुए हैं अतः दांतों की सुरक्षा में दांत ही नहीं मसूड़े भी हैं। शरीर के अन्य अवयवों की भांति मसूड़ों को भी व्यायाम की आवश्यकता है। इसके लिए सबसे पहली जरूरत है कि ठीक तरह धीरे-धीरे ब्रश किया जाये तथा किसी भी स्थिति में 'प्लाग' (Plaque) न बनने दिया जायें। प्लाग दांतों के तल में जमा होने वाला बैक्टीरियायुक्त घातक तरल पदार्थ है जो मसूड़ों के इर्द-गिर्द ही कचरे के रूप में इकट्ठा रहता है तथा वह उनके क्षय का कारण बन जाता है। दांतों की सुरक्षा के लिए मिठाई, चॉकलेट, आइसक्रीम, टॉफी अधिक नहीं खानी चाहिए। पान, सुपारी व तम्बाकू सेवन दांतों के स्वास्थ्य के लिए अहितकर है। चाय व कॉफी की अधिकता भी वर्जित है क्योंकि इसमें प्राप्त टेनिन क्षयकारी है। मसूड़ों के स्वास्थ्य के लिए विटामिन "सी" का प्रयोग आवश्यक है। वर्षों पहले 'स्कर्वी' (Scurvy) नामक रोग फैला था तथा जिसके प्रभाव के कारण लोगों ने दांत गँवा दिये थे। बहुत बाद में पता चला कि यह सब विटामिन "सी" की कमी के कारण हुआ था। बालकों में दांतों के विकास के लिए कैल्शियम का प्रयोग आवश्यक है। मुंह में प्रवेश करने वाली हर चीज को कूटपीस देने वाले दांतों के प्रति यदि हम अनमयस्क रहते हैं तो हम और केवल हम उत्तरदायी हैं। तब हमारा चेहरा भी मायूस हो जाता है और हमारा व्यक्तित्व भी डगमगा जाता है। अतः दंत स्वास्थ्य के बारे में किसी प्रकार की अनमयस्कता अहितकर है।

मोती जैसे दांत किसे अच्छे नहीं लगते, लेकिन एकदम सफेद दांत बहुत कम दिखाई देते हैं। अधिकांश दांत हल्का पीलापन लिए हुए होते हैं क्योंकि वे आहार से जल्दी ही अभिरंजित हो जाते हैं। अतः यह आवश्यक है कि खाना खाने के बाद ब्रश किया जाये। कई बार न तो बालक खाना खाने से पहले हाथ साफ करते हैं और ना ही खाना खाने के बाद ब्रश करते हैं जो उनके दंत क्षरण का उत्तरदायी घटक बन बैठता है। आपके दांत कितने भी चमकीले क्यों न हो और मसूड़े कितने ही मजबूत, छः माह में दंत चिकित्सक से परामर्श अवश्य लेना चाहिए।

14, फ्रेन्ड्स एन्क्लेव, (ओल्ड रोडवेज डिपो)

सर्किट हाउस के सामने, भरतपुर-321001

जिद न करो

- मेहरबान सिंह नेगी

पल्लवी पल्लू छुड़ाने की कोई जिद न करो
पल्लवी पल्लू बंधी-
है ये अल्ला का फ़ज़ल

तल्लियां और बढ़ाने की यूँही हद न करो
पल्लवी पल्लू छुड़ाने की कोई जिद न करो
तुम मेरी नींद उड़ाने की कोई जिद न करो॥

पल्लवी पल्लू छुड़ाने की वही जिद न करो
बिछ चुकी हैं पटरियां
दो जो दिल्ली-मैट्रो की

उनमें से एक उठाने की अभी जिद न करो
तुम मोनो रेल चलाने की अभी जिद न करो
तुम मेरी नींद उड़ाने की वही जिद न करो॥

पल्लवी पल्लू छुड़ाने की वही जिद न करो।
ऐसे जजबात में

खतरात बहुत हैं जानम/जोखिम

तुम वो खतरात उठाने की वही जिद न करो
पल्लवी पल्लू छुड़ाने की वही जिद न करो
तुम मेरी नींद उड़ाने की वही जिद न करो॥

पल्लवी पल्लू छुड़ाने की वही जिद न करो

गाए हैं गीत कई-

मिलन के अब तलक

विग्रही गीत को गाने की अभी जिद न करो
मातमी धुन को बजाने की कोई जिद न करो
तुम मेरी नींद उड़ाने की वही जिद न करो॥

पल्लवी पल्लू छुड़ाने की वही जिद न करो
लफ़्ज है एक ही
जिससे है नफ़रत मुझको

लफ़्ज वही तीन दफा दुहराने की जिद न करो
पल्लवी पल्लू छुड़ाने की वही जिद न करो
तुम मेरी नींद उड़ाने की वही जिद न करो॥

पल्लवी पल्लू छुड़ाने की वही जिद न करो
आया सावन है अभी
लेके फुहारें रिम झिम

तुम उसे लौट के जाने की अभी जिद न करो
हरे सावन को सुखाने की अभी जिद न करो
तुम मेरी नींद उड़ाने की वही जिद न करो॥

पल्लवी पल्लू छुड़ाने की वही जिद न करो
गा रहे गीत हैं
मधुमास-सा चौमासा आया

तुम तरन्नुम को दबाने की अभी जिद न करो
सुर संगीत रूकाने की अभी जिद न करो
तुम मेरी नींद उड़ाने की वही जिद न करो॥

पल्लवी पल्लू छुड़ाने की वही जिद न करो।
तुम मेरी नींद उड़ाने की वही जिद न करो
ना जिद न करो, हाँ जिद न करो
जिद-न-करो॥

कमरा संख्या 1308, पालिका केंद्र,
नई दिल्ली नगरपालिका परिषद्
नई दिल्ली-110001



श्राद्ध नहीं श्रद्धा कीजिए

- रामरती शौकीन

आश्विन मास का महीना शुरू होते ही पूरे भारत में एक हवाबहने लगती है कि श्राद्ध शुरू हो गए। सभी घरों में अपने पूर्वजों की मृत्यु-तिथि को याद किया जाता है कि अमुक तिथि को हमारे पितामह, पितामही, माता, पिताजी का देहान्त हुआ था। इसीलिए आज हम उनकी पसन्द का भोजन बनाकर ब्राह्मण को खिलाएँगे तो हमारे पूर्वजों की आत्मा बहुत प्रसन्न होगी। उनकी मुक्ति हो जाएगी। यह तो है छोटे पैमाने पर जो लगभग हर गृहस्थी के घर में घटित होता है। इससे बड़े पैमाने पर लोग तीर्थ-स्थलों पर जाकर स्नान, दान-पुण्य करते हैं।

जब से मुझे याद है जब मैं छोटी थी मेरे घर में खीर, हलवा, माल-पुए आदि खाद्य-पदार्थ बनते और उन पन्द्रह दिनों में आश्विन मास के प्रारम्भ से पूर्णमासी तिथि से अमावस्या तक सोलह दिन श्राद्ध के हैं। अक्सर मुझे ये बात पता चलती कि आज अमुक का श्राद्ध है इसलिए आज के दिन तो ये अच्छे-अच्छे खाद्य पदार्थ बनने ही चाहिए। मुझे कुछ पता नहीं था क्योंकि मैंने अपने उन पूर्वजों को नहीं देखा था। बस खाने को अच्छे-अच्छे पदार्थ मिल जाते और बाल सुलभ स्वभाव से दादी से पूछ लेती कि अब

कब-कब ये सब बनेगा। दादी ने बताया कि अमावस्या का दिन तो पितरों का दिन है। इस दिन सभी पितर जाग जाते हैं और हम उनकी आत्मा-सन्तुष्टि के लिए उनके पसन्द के अच्छे-अच्छे पकवान से ब्राह्मणों को भोज कराते हैं। मुझे ज्यादा कुछ मालूम नहीं था।

विवाहोपरान्त आश्विन का महीना आया मेरी सास ने भी वह सब दोहराया। इतना ही नहीं मेरी सास को तो बहुत खेद था कि उनको तो अपनी सास की मरण-तिथि ही नहीं पता इसलिए आज तक वह अपनी सास का श्राद्ध नहीं कर पाई फिर कुछ सन्तुष्ट होकर बोली कि अमावस्या को तो सभी पितर जागते हैं इसलिए वह अमावस्या को ही हव्य कव्य देती है।

सब सहज भाव से चल रहा था। परन्तु जैसा कि प्रकृति का नियम है वह हमें अचानक छोड़कर स्वर्गलोक सिध र गई। नवमी तिथि थी आश्विन का महीना कृष्ण पक्ष। रिश्तेदारों ने खेद भी प्रकट किया और हमें सांत्वना भी दी कि श्राद्धों के दिन हैं, खुला दरबार है सीधा मोक्ष मिलेगा ऐसा पण्डितों की मान्यता है। अगला वर्ष आया। मेरे पति और ससुर ने मुझे चेताया कि तुम्हारी माँ (सास) का श्राद्ध करना है। दान पुण्य से उनकी आत्मा प्रसन्न होगी। मेरी माँ तुल्य सास मुझे भी बहुत प्यार करती थी। रसोई में मेरी बहु ने खाद्य-पदार्थ बनवाने में मेरी मदद की मैं आवासीय समिति के एकमात्र मन्दिर में पण्डित के पास गई।

वहाँ जाकर मैंने देखा बड़े से बर्तन में पण्डित मेरे जैसे 20-30 लोगों के द्वारा लाई-गई खीर उड़ेल रहे थे और कुछ श्रद्धालुओं के बर्तन सहित अपने पास रख रहे थे। मैं हैरान ये है क्या? कम से कम 50 घरों से आए पकवान पण्डित कैसे खाएगा? कैसे पितर तृप्त होंगे। मैंने कई जगह पूछा ऐसा क्या सच है। मुझे सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। हिन्दू मान्यता के वेद, शास्त्र, स्मृति गीता किसी में भी ऐसा वर्णन नहीं मिला जो श्राद्धों के बारे में

पुष्टि करे। अध्ययन करने पर मुझे यजुर्वेद, मनुस्मृति व ब्राह्मणों में इसके प्रमाण द्रष्टवा हैं। पितर शब्द के लिए यजुर्वेद में लिखा है।

उर्ज वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम्।

स्वधास्थ पतयत में पितृना॥ (यजु 2/34) अर्थ-पिता या स्वामी अपने पौत्र, स्त्री, नौकरों को सब दिन (प्रतिदिन) के लिए कहे कि जो मेरे पिता, पितामह, मातामही-माता, आचार्य, मान करने योग्य विद्वान हों उन सबकी आत्माओं को अर्थात् उन सबको यथायोग्य सेवा से प्रसन्न किया करो। सेवा करने के पदार्थ ये हैं उत्तम-उत्तम जल, विविध रस, घी, दूध, उत्तम-उत्तम अन्न व सब प्रकार के उत्तम-उत्तम फल। इन सभी पदार्थों से उनकी सेवा सदा करते रहो। हे पूर्वोक्त पितृ लोगों तुम सब अमृत रूपा पदार्थों के भोगों से सदा सुखी रहो।

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।

होमो दैवो बलिर्भोतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्॥ मनुस्मृति।

अर्थात्-पढ़ना-पढ़ाना, संध्योपासना करना 'ब्रह्मयज्ञ' कहलाता है। माता पिता आदि की सेवा-सुश्रुषा तथा भोजन आदि से तृप्ति करना 'पितृयज्ञ' कहलाता है। प्रातः सांय यज्ञ करना दैवयज्ञ है। कीटों पक्षियों, कुत्तों, कुष्ठी व्यक्तियों तथा भृत्य आदि आश्रितों को भोजन का भाग बचाकर देना 'भूतयज्ञ' या 'बलिवैश्वदेवयज्ञ' कहलाता है अतिथियों को भोजन देना, सेवा-सत्कार करना 'नृयज्ञ' अथवा अतिथि यज्ञ कहलाता है।

देवताऽतिथिभृत्यानां पितृणामात्मनश्च यः।

न निर्वपति पञ्चानामुच्छ्वसन्न स जीवति॥ मनुस्मृति

अर्थात् जो गृहस्थ व्यक्ति देवता, अतिथि, भृत्य, माता-पिता, पितामह, पितामही और अपनी आत्मा के लिए पाँच दैनिक महायज्ञों को नहीं करता है वह सांस लेते हुए भी वास्तव में नहीं जीता।

कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा।

पयोमूलफलैर्वाऽपि पितृभ्यः प्रीतिमावहन्॥ मनुस्मृति

अर्थात् गृहस्थ व्यक्ति अन्न आदि भोज्य पदार्थों से, जल तथा दूध से, कन्द-मूल, फल आदि से माता-पिता व अन्य बुजुर्गों से अत्यन्त प्रेम करते हुए प्रतिदिन 'श्राद्ध' श्रद्धा से किए जाने वाले सेवा-सुश्रुषा, भोजन देना आदि कर्तव्य करे।

पितृयज्ञ के दो भेद हैं एक तर्पण दूसरा श्राद्ध। जिस कर्म से माता-पिता को सुखयुक्त करते हैं उसे -'तर्पण' कहते हैं और जो इन लोगों की श्रद्धा से सेवा करता है वह श्राद्ध कहलाता है। पितर से अभिप्राय-पान्ति पालयन्ति रक्षन्ति अन्न-विद्या सुशिक्षा आदिदानैः ते पितरः अर्थात् जो अन्न, विद्या-सुशिक्षा आदि से पालन-पोषण व रक्षण करते हैं वे पितर कहलाते हैं। इसमें ब्राह्मणों के प्रमाण भी द्रष्टव्य हैं।

(अ) देवा वा एते पितरः। (आ) स्विष्टकृतो वै पितरः अर्थात् सुख-सुविधाओं द्वारा पालन-पोषण करने वाले, हित करने वाले विद्वान व्यक्ति 'पितर' कहलाते हैं। यह सब प्रत्यक्ष में ही अर्थात् जो विद्यमान है उन्ही में ही घटता है, मृतकों में नहीं। मृतकों की प्राप्ति और उनका प्रत्यक्ष होना असम्भव है। मृतकों की सेवा तो किसी प्रकार भी नहीं की जा सकती है और जो उनका नाम लेकर देवे वह पदार्थ उनको कभी नहीं मिल सकता। इसलिए मृतकों को सुख पहुँचाना सर्वथा असम्भव है।

वेद, स्मृति व ब्राह्मणों के प्रमाणों को आधार मानते हुए इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि 'श्राद्ध' का अर्थ 'जीते जी' जीवित अवस्था में ही अपने पितामह-पितामही माता-मातामही, पिता व अन्य सम्मानीय वृद्ध जनों की भली-भाँति सम्मान देते हुए सेवा करनी चाहिए। उनको अहसास दिलाते रहना चाहिए कि आपके जीवन की हमारे लिए बहुत उपयोगिता है। आप से हम हैं आप हमारे से नहीं हो इसलिए 'श्राद्ध' नहीं श्रद्धा कीजिए।

31/11, सेक्टर-5, रोहिणी
दिल्ली-110085



अनुशासन आज की आवश्यकता

- विपिन शर्मा

अनुशासन ही देश को महान बनाता है' यह कथन पूर्णतः सत्य है। अनुशासित नागरिक ही देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर करते हैं इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी भी देश के नागरिकों की अनुशासनहीनता उस देश के पतन का कारण बन जाती है। राष्ट्र का निर्माण चट्टानों तथा वृक्षों से नहीं वरन उसके नागरिकों के चरित्र से होता है।

अनुशासन से तात्पर्य है- नियम- विज्ञान के अनुसार कार्य करना। बड़ों की आज्ञा मानना, अधिकारियों के आदेश का पालन करना भी अनुशासन कहलाता है।

अनुशासन के 'आत्मिक और बाहरी' दो रूप माने जाते हैं। इसमें आत्मिक अनुशासन को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है। दंड और भय के बल पर हम किसी को पूर्ण रूप से अनुशासित नहीं कर सकते। प्लेटो के अनुसार-

"Discipline must be based on love and controlled by love" दंड को आज व्यक्तित्व के विकास में बाधक माना जाने लगा है। अनुशासन को यदि आचरण मान लिया जाए तो छात्र उसे आत्मप्रेरणा से ग्रहण करने लगता है। मानव जीवन कर्तव्यों से जुड़ा होता है। अपने शरीर के प्रति उसके कुछ कर्तव्य होते हैं तो समाज और राष्ट्र के प्रति भी।

वह अपने कर्तव्यों को भली-भांति तभी पूरा कर सकता है जब वह अनुशासित रहे। वह अनुशासन में रहकर अपनी दिनचर्या का निर्वाह करे तो वह स्वस्थ और सफल होता है। शिक्षा, राजनीति, प्रशासन, सेना आदि सभी जगह अनुशासन का महत्व है।

अनुशासन का पालन करके अपने जीवन में सफल होने वाले लाखों व्यक्तियों के उदाहरण हमारे सामने हैं महात्मा गांधी ने देश की आजादी के लिए अनुशासन को सबसे अधिक महत्व दिया। अनुशासन के चलते ही उन्होंने हमेशा प्रगति के तमाम सपनों को पार किया। यह अलग बात है कि इसमें उन्हें दिक्कतें भी आईं।

स्वामी विवेकानन्द, राधाकृष्णन, जवाहरलाल नेहरु आदि सभी ने अनुशासन के महत्व को स्वीकार किया है। आज हमारे देश में चारों ओर जो अराजकता, आपा-धापी मची हुई है, उसका मुख्य कारण अनुशासनहीनता ही है। आज स्कूल, कॉलेज, कार्यालय किसी भी जगह अनुशासन नहीं है। हमारे राजनेता, मंत्री, संसद सदस्य सब अनुशासनहीन हैं।

आज के विद्यार्थियों में भी अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। इसका मुख्य कारण है हमारी शिक्षा प्रणाली जो वास्तविकता से दूर है वह छात्रों को केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करती है। चारित्रिक और नैतिक मूल्यों में आधुनिक शिक्षा में बहुत कम योगदान किया है। इस कारण देश में हिंसा, भ्रष्टाचार, आतंकवाद आदि प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं।

आत्मकृतानां हि दोषाणां

नियम भवितव्यं सलमात्नैत।

अपने द्वारा किए गए स्वकृत दोषों का फल निश्चित रूप से स्वयं ही भुगतना पड़ता है, अतः नियम और आचार के प्रति सचेत रहना आवश्यक है। अनुशासन कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कुछ दिनों में स्थापित किया जा सके। शक्ति के डर से स्थापित अनुशासन क्षणिक होता है जो शक्ति के कम होते ही और भी अधिक अनुशासनहीनता में बदल जाता है। अनुशासन का आरंभ परिवार से होता है तथा विद्यालय में जाकर यह विकसित होता है। जो बच्चे अनुशासन का पाठ अपने विद्यालय में पढ़ लेते हैं वे जीवन भर अनुशासन में रहते हैं।

अनुशासन में रहना कायरता नहीं है। अनुशासन तो मनुष्य को पशु से ऊपर उठाता है, उसे सच्चे अर्थों में मानव बनाता है। यह तो देशहित की बात है। अनुशासन से ही देश को बल मिलता है। रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार 'सफल शिक्षा समग्र जीवन को पूर्ण रूप से प्रभावित करती है। यदि अनुशासन के महत्व को न समझा गया तो हमारी स्वतंत्रता भी खतरे में पड़ जाएगी'।

इस विषय में सावधान करते हुए श्री हरी कृष्ण 'प्रेमी' जी ने कहा है-

'देश को बल युक्त करने, यदि न चले अनुशासन से हम, तो कल देगा फिर हमें, दास्ता की जंजीर पहना, है सरल आजाद होना, पर कठिन है आजाद रहना।'

हिन्दी विभाग

नवयुग विद्यालय, मोतीबाग

नई दिल्ली



लघुकथा

फितरत

- उमाकांत खुबालकर

श्रीकांत आज फिर गच्चा खा गया यानि उसकी नियति ही ऐसी बन गई थी। जीवन के हर मोड़ पर सुष्मिता चेताती रहती। परंतु उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ता था। वह समझाया करती “सिर्फ अपनी ओर देखा करो। दुनिया जाए भाड़ में। दीन-दुखियों की चिंता करने के लिए ऊपरवाला जो है। मुहल्ले में किसी के घर मुसीबत आ पड़ती बिना सोचे विचारे श्रीकांत दौड़ पड़ता। बाद में सुष्मिता की गालियां खाता रहता। एक दिन की बात है। बच्चे के स्कूल की फीस पटाने के लिए दफ्तर से आधे दिन की छुट्टी ली। सुष्मिता को लाजपतनगर में कुछ काम था। वह भी पति के साथ चल पड़ी। दोनों रिंग रोड से एक भीड़ भरी बस में किसी तरह सवार हुए। खड़े रहने के लिए जी तोड़ संघर्ष करना पड़ रहा था। इसी दरमियान दोनों को बैठने के लिए सीट मिल गई। सुष्मिता ने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दिया। बस रिंग रोड पर तेजी से दौड़ती रही। पति-पत्नी घर गृहस्थी की बातों में मशगूल हो गए। इस बीच श्रीकांत की सीट के सामने मरियल सा बूढ़ा व्यक्ति जाने कहां से प्रकट हो गया। बूढ़े ने कारुणिक भाव से इधर-उधर नजर दौड़ाई। काश कोई बैठने के लिए सीट कुर्बान कर दें। सुष्मिता जानती थी कि उसका पति ऐसे अवसर पर सबसे पहले कूद पड़ता है। इसीलिए उसने संकेतों के सहारे समझाने की कोशिश की। त्याग के झंझट में न पड़े। श्रीकांत को वृद्ध व्यक्ति में पिता का रूप नजर आया। वह खड़ा हो गया। श्रीकांत का गंतव्य आ चुका था। शायद नीचे उतरते-उतरते किसी जेब-कतरे ने उसका बटुआ पार कर दिया। स्कूल पहुँचकर फीस देने के लिए ज्यों ही जेब में हाथ डाला। तब होश उड़ गए वहां कुछ नहीं था यानि साढ़े तीन हजार का चूना यूँ ही लग गया। पिछले एक बरस से हाड़ तोड़ मेहनत करके इतनी बड़ी रकम खड़ी की थी। अब कहां से जुटा जाएगा वह सब? सोचकर आंखों के सामने अंधकार छा गया फिर घर पहुँचकर सुष्मिता की नजरों का सामना किस तरह कर जाएगा?

कालांतर

शबरी ने देखा राम अकेले ही उसकी कुटिया में आए हैं। अवाक रहकर विचित्र-सी आशंकाओं से घिर गई चूँकि पिछली बार ऋषि-मुनि, पेड़-पौधों ने तक राम-लक्ष्मण के आने की सूचना दे दी थी। इसीलिए झूठे बेर खिलाकर अतिथ्य सत्कार किया और इस समय बेर का पेड़ तो क्या पूरा का पूरा बन प्रदेश ही माफिया बिल्डर ने खरीदकर सीमेन्ट क्रंक्र्रीट का जंगल बना दिया है। किसी तरह एक भुतहा पेड़ बच गया था। घास-फूस डालकर कुटिया जैसा बना दिया। परंतु जनजातिय रूप-रंग कद-काठी के कारण उसे चुड़ैल मानकर समाज से बहिष्कृत कर दिया। आसपास के लोगों ने अमानवीय यातनाएँ देकर जान से नहीं मारा इसीलिए वह लोगों को सभ्य मानती है। अतिथि सत्कार के लिए हड़बड़ाकर इधर-उधर भागी आखिर कुटिया में क्या मिलता? उसकी व्यग्रता देख राम स्वयं जमीन पर बैठ गए। आंखों में कुछ प्रेमाश्रु बच गए थे। वही राम के चरणों में छलक पड़े। राम मुस्करा पड़े।

“प्रभु, आप बरसों बाद आए हैं। कुछ ढंग से स्वागत-सत्कार नहीं कर पा रही हूँ राज्य में दिनोदिन बदतर हालात होते जा रहे हैं।” राम ने बीच में बात काटते हुए कहा- “इसीलिए आया था कि कुछ दिनों बाद में चुनाव होने वाले हैं। भाई-भाई के बीच तलवारें खिंच गई हैं। तुम तो मुझे जानती हो? सीधा-सादा हूँ। राजनैतिक दाँव-पैच से अनभिज्ञ। दंडकारण्य प्रांत से खड़ा हूँ। तीर-कमान के चुनाव-चिन्ह पर निशान लगा देना। जीत गया तो, फिर से जंगल उगा दूँगा और सरयु को यहाँ तक खींच ले आऊँगा। धन्यवाद।”

शबरी किंकर्तव्यविभूद-सी खड़ी उस ओर निहारती रह गई। जहां से राम गए थे।

915/सेक्टर-12, टाइप-4,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022

तीन कविताएँ

- सुनीता शानू

पंछी

पंछी तुम कैसे गाते हो?
अपने सारे संघर्षों में तुम-
कैसे गीत सुनाते हो? पंछी तुम कैसे गाते हो?
जब अपने पंखों को फैला-
तुम आसमान में उड़ते हो।
तब कोई न तुमको रोक सके
तुम सीधे प्रभु से जुड़ते हो।
पर बोलो! किस ताकत से तुम
यह इंद्रजाल फैलाते हो? पंछी तुम कैसे गाते हो?
बच्चे राह देखते होंगे-
यह चिंता विहवल कर देती।
पर उनकी आँखों की आशा-
पंखों को चंचल कर देती।
तुम महाविजेता बनकर जब-
दाना लेकर घर आते हो। पंछी तुम कैसे गाते हो?
अपने सारे विद्रुपों में-
जीने की ऐसी अभिलाषा!
पीड़ा के महायुद्ध में भी
माधुर्यमयी ऐसी भाषा!
पंछी तुम छोटे होकर भी-
जीवन का सार बताते हो। पंछी तुम कैसे गाते हो?

तुम्हारे बगैर

मुश्किल होगा
तुम्हारे बिन जीना
कल्पना करना भी
पाप होगा शायद
तुम जानते हो सब
बच्चों की कसम भी
खा गई थी वो
आँखों में आँसू
दिल में हलचल कि
कैसे कटेगी
देह से लिपटी बासंती उम्र
तुम्हारे इर्द-गिर्द
सपनों का मकड़जाल बुनती
ख्वाहिशें तमाम
किन्तु परन्तु सभी शब्दों ने
झिंझोड़ कर रख दिया
कि अचानक
किसी ने कंधा थपथपाया
जाने वाले के साथ
भला कोई जाता है
तुम्हें जीना ही होगा
खुद सँवरना होगा
वक्त की साजिशों ने
जकड़ लिया बंधन में
खा गई वह फिर एक बार
बच्चों की कसम
जी ही लेगी अब
तुम्हारे बगैर....

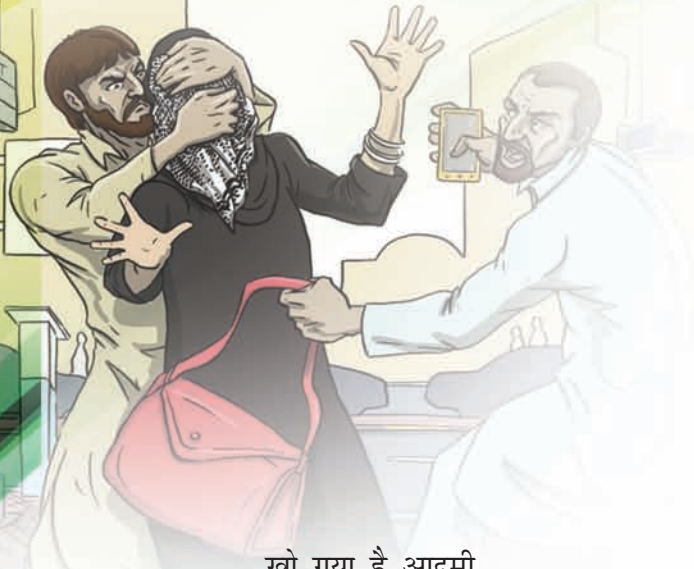
तीन कविताएँ

तो फिर प्यार कहाँ है

बहुत खुश थी वह कि
सब प्यार करते हैं उसे
खयाल रखते हैं उसका
बाबूजी का चश्मा
जो अक्सर
भूल जाते थे रखकर
या उनकी कलम
खो जाती थी
हरदम
यहाँ तक की खाना पीना
हुक्का पानी
हर चीज का
खयाल रखती थी वह
पति को सम्भालना
सर दबाना, पैर दबाना
मौजे, जूते, टाई
सब हो जाता था
चुटकी में
सिर भारी हो जाता था
किन्तु मन नहीं
बच्चों का प्यार
भर देता था जोश
जेब खर्ची भी
बच्चे माँ से पाते थे
हर गलती पर
माँ का आँचल बचा लेता था उन्हें
हमेशा
बनी रहती थी
पेड़ की छाल
जो सह लेती है

हर चोट
पेड़ कटने से पहले
लेकिन
आज बरसों बाद
एक लम्बी बीमारी
ने उसे
तोड़ कर रख दिया
चारपाई पर
कुछ दिन
बरसा प्यार
रिश्तेदारों का दुलार
बच्चे भी दुलारते थे
माँ की तरह
पति भी नहीं बताते थे
अपनी परेशानियाँ
कि उन्होंने सीख लिया है
अकेले रहना
बाबूजी आज भी पूछ रहे हैं
मेरा चश्मा, मेरी कलम
बहू मेरा हुक्का कहाँ है
सभी व्यस्त हैं और
वह एक कोने में
अपनों के इंतजार के साथ
कि शायद कहीं से
आवाज़ कोई आये
उसे क्या चाहिये
वह जरूरत थी सबकी
हाँ शायद
किन्तु यही सच है
बेकार, बेरोजगार, बीमार
किस काम का?
तो, फिर प्यार कहाँ है?

206/3, गली न-5, पद्म नगर,
किशन गंज, दिल्ली-110007



खो गया है आदमी

- सत्यनारायण इंदौरिया 'सत्य'

खो गया है आदमी
आज के बाजार में।

सूर्य मानवीय कहाँ?
पूछता कोई नहीं।
वैश्विकी बाजार में
दिखा न आदमी कहीं।

हिंस्र पशुओं की तरह
डोलते बेहाल हो।
वक्त खाने आ रहा
काल ज्यों विक्राल हो।

तड़पता है मन यहाँ,
दुःख के आगार में।
खो गया है आदमी
आज के बाजार में।

चिंत्य चेत्य विफर गया,
हो विलोपित भावना।
वक्त रहा है ज्यों मनुज
बेसमझ मन बावना।

राष्ट्र भारत भाव को
क्यों नहीं संभालते।
श्रेष्ठ आर्य संस्कृति को
क्यों नहीं नर पालते।

हुई विलुप्त चेतना
बाजारू विचार में।
खो गया है आदमी,
आज के बाजार में।

22, सत्य सदन, कार्तिकेय कुंज
रतनगढ़, जि. चूरू (राज.) 331022

खो गया है आदमी
आज के बाजार में।

लार को टपका रहे
हिंसक भेड़िये यहाँ।
हाथ काटत हाथ को
दर-मुलाई को यहाँ।

यहाँ जमीर बिक रहा,
जिन्दगी भी बिक रही।
मांस-मज्जा अस्थियाँ
भट्टियों में सिक रही।

यहाँ सबकुछ बिक रहा,
वैश्विकी संसार में।
खो गया है आदमी
आज के बाजार में।

नित्य फिल्मी तख्त पर
नग्न नारी हो रही।
अंध-तमसा में भटक
मूल्य-जीवन खो रही।

हर अमीरी में यहाँ
लोग-गरीब बिक रहे।
चाट चख विज्ञापनी
पत्तलों में लिक रहे।

जरख-जबड़ों काल के
चिप रहे हैं जार में।



अच्छा लगता है

- ओमप्रकाश बजाज

कभी कभी बीते दिनों में झांकना
समय की किताब के पीले पन्ने पलटना
गुजरी जिन्दगी के गलियारों में
चहलकदमी करना
भोगे हुए यथार्थ से रूबरू होना
अच्छा लगता है,

बचपन की अनूठी यादों
लड़कपन की मासूम शरारतों
स्कूल कालिज के हंगामों
जवानी की मधुर अनुभूतियों को
मनसपटल पर रिवाइंड कर के
एक बार फिर से जीना
अच्छा लगता है।

बीता कल
पुरानी यादें
समय की परतों तले दबी स्मृतियां
अभिभूत कर जाती हैं
उन में फिर से विचरण करना
कुछ देर के लिए ही सही
वर्तमान के तनाव से मुक्त हो जाना
अच्छा लगता है।

स्मृतियाँ

न जाने कहां कहां से स्मृतियां
उमड़ते घुमड़ते बादलों सी चली आती हैं,
धरती पर पड़ती वर्षा की बूंदों सी
मन मस्तिष्क को भिगो भिगो जाती हैं

स्मृतियां सहलाती हैं गुदगुदाती हैं
खट्टी मीठी यादों से रूबरू कराती हैं,
स्मृतियां लुकाछिपी का अद्भुत
रोचक खेल खिलाती हैं

कभी सुगंधित हवा के झोंके सी
कभी तपती झुलसाती लू के थपेड़े सी
स्मृतियां आती हैं
तो आती ही चली जाती हैं,

स्मृतियां बार बार फेरा लगाती हैं
स्मृतियां जीवन भर साथ निभाती हैं,
बढ़ती आयु के साथ स्मृतियों की
आवाजाही भी बढ़ जाती हैं,

बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर-482001, (म.प्र.)



हँसने में है जीवन का प्रभात

- अभय कुमार जैन

लखनऊ के रेलवे स्टेशन से जब आदमी बाहर निकलता है, तो बड़े अक्षरों में लिखे बोर्ड पर नजर टिकती है- “मुस्कुराइए कि आप लखनऊ में हैं।” यह वाक्य पढ़ते ही यात्रियों के चेहरे पर मुस्कुराहट फैल जाती है। इस एक वाक्य में लखनऊ की जिंदादिली, खुशमिजाजी और नवाबों के समय से चली आ रही लखनऊ की नजाकत के दर्शन होते हैं।

हँसना एक मानवीय लक्षण:

हँसना एक मानवीय लक्षण है। किसी ने तो मानव की परिभाषा यह दी है कि वह हँसने वाला प्राणी है। जीवन में निरोग रहने के लिए हमेशा मुस्कुराते रहना चाहिए। खाना खाते मुस्कुराइए, आप यह महसूस करेंगे कि भोजन अधिक स्वादिष्ट लगेगा। थैकर नामक विचारक ने कहा है- “प्रसन्नता ऐसी पोशाक है, जो हर समाज, सोसाइटी में, हर मौसम में पहनी जा सकती है। मनुष्य की आत्मा की सन्तुष्टि, शारीरिक स्वास्थ्य और वृद्धि की स्थिरता नापने का एक ही थर्मामीटर है, चेहरे पर लिखी प्रसन्नता।”

शेक्सपीयर ने कहा है- प्रसन्नचित आदमी अधिक जीता है। दुःखी, चिंतातुर और उदास मुखवाला, सभी को ऐसा मायूस लगता है, जैसे कोई मौत की खबर लेकर आया हो।”

गीता में श्री कृष्ण ने कहा है-

“प्रसादे सर्व दुःखाना हानिरस्योपयाजते,
प्रसचेतसो सासहाश बुद्ध पर्थवतिष्ठे।

चित प्रसन्न रहने से सब दुःख दूर हो जाते हैं, जिससे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त ही स्थिर हो जाती है। सेन फ्रांसिस्को में 22 मार्च 1987 को ए.पी. द्वारा प्रसारित समाचार में कहा गया है कि एकजीक्यूटिव डाक्टरी तथा चिकित्सा क्षेत्र में लगे अधिकारियों और विद्वानों का कहना है कि हँसी को गम्भीरता से लीजिए, यह आपके स्वास्थ्य और सम्पत्ति में वृद्धि में सहायक सिद्ध होगी।

एक पुरानी कहावत है-

आप थोड़ा सा मुस्कुराइए तो मीलों तक मुस्कुराहट बिखर जाएगी।” इसका भावार्थ यह है कि - यदि आप मुस्कुराए तो सामने वाला भी मुस्कुराएगा, यह बढ़ता ही जाएगा। हमारे चारों तरफ मुस्कुराहट की खुशबू बिखर जाएगी। अतः ठीक ही कहा है- स्माइ ए व्हाइल, माइल्स विल स्माइल।”

कैलिफोर्निया में स्थित प्लेफेयर इनकारपोरेट के संस्थापक अध्यक्ष मेटवीरस्टीन, कार्यभार को विनोदपूर्वक हल्के-फुल्के ढंग से लेने का प्रशिक्षण देने का काम करते हैं। प्रतिवर्ष वह विभिन्न कम्पनियों में कार्यरत एक लाख व्यक्तियों को इस कार्यविधि का प्रशिक्षण देते हैं, उन्होंने अपने भाषण में कहा कि “मैं सभी को यही सलाह देता हूँ कि आप अपने काम को गम्भीरता से न लें, हल्के-फुल्के मन से काम को स्वीकार करें, व्यवस्था की प्रवीणता का यह अत्यावश्यक गुर है। उन्होंने बताया कि शोध से यह बात प्रकाश में आयी है कि हँसने-हँसाने से शरीर को रोगमुक्त रखने वाली शक्ति को बढ़ावा मिलता है तथा मस्तिष्क में पीड़ानाशक का उत्पादन होता है।

स्वास्थ्य संस्था हार्ट फाउन्डेशन ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष डॉ. कर्नल के.एल. चौपड़ा द्वारा लिखित पुस्तक “योर लाइफ इज इन योर हेण्ड” के अनुसार हँसने से हमारे शरीर में सकारात्मक भाव तथा विचार जन्म लेते हैं। हँसने से ऐसे रसायनों की उत्पत्ति होती है, जिससे निरोग्य का आभास होता है- ये रसायन न केवल दर्द के अहसास को कम करते हैं, अपितु शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाते हैं। हँसने से रोगी को स्वस्थ होने में भी सहायता मिलती है। हँसना आयु में भी वृद्धि करता है।

“हँसी जीवन का प्रभात है, यह शीतकाल की मधुर धूप है तो ग्रीष्म की तपती दुपहरी में सघन छाया हैं इससे आत्मा खिल उठती है। इससे आप तो आनन्द पाते ही हैं, दूसरों को भी आनन्द प्रदान करते हैं, हास-परिहास पीड़ा का दुश्मन है, निराशा और चिन्ता का अचूक इलाज है और दुःखो के लिए रामबाण है”
- स्वेट मार्टन

एक विद्वान ने कहा है- “पवित्र मुस्कान देना, मोतियों का कोष देने से बढ़कर हैं यदि मैं आपको एक कौड़ी भी न दूँ, कुछ भी शारीरिक सेवा नहीं, केवल प्यार से सच्चे व साफ दिल से तुम्हारे प्रति प्रसन्नता भरी मुस्कान से हंस दूँ तो तुम्हारा प्रफुल्लित होना, समुन्नत होना व ऊपर उठना अपरिहार्य हैं। यही मानव जाति की बड़ी सेवा है। चिन्तक फ्रेंकलिन ने भी कहा हैं- धन के स्वभाव में ऐसी बात नहीं हैं, जो आनन्द व प्रसन्नता पैदा करे लेकिन जो अपने धन को परमार्थ में लगाते हैं, उन्हें अवश्य आनन्द व प्रसन्नता मिलती है। स्वेटमार्टन ने इस बात को बड़े सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया हैं; “प्रसन्नता के प्याले को दूसरों के आगे बढ़ाने से अधिक दैवी कार्य और क्या हो सकता? जो इस कार्य में लगे हैं, उनसे सुन्दर व सुखी कौन है?”

उन्होंने आगे कहा है- मनुष्य जिस मार्ग से जाये, उस मार्ग पर प्रसन्नता के पुष्प बिखेरते जाना चाहिये, हो सकता है, उस मार्ग पर फिर दुबारा जाना न हो।”

हितोपदेश में भद्रपुरुष के बारे में उम्दा सूक्ति की गई है:-

मुखं प्रसन्नं विमलं च दृष्टिः

कथा अनुरागो मधुरा च वाणीः।

स्नेहो अधिकः संभ्रम दर्शनं च

सदानुरक्तस्य जनस्य लक्षः॥

अर्थात् सदैव प्रसन्न रहना, स्नेहपूर्ण दृष्टि प्रेम पूर्ण बातचीत, मधुरवाणी, बहुत स्नेह प्रकट करना, बार-बार मिलना ही प्रेमीजनों के लक्षण हैं।”

विदुर नीति में बताया हैं- सब तीर्थों का स्नान और सभी प्राणियों के साथ मधुर व्यवहार समान हैं।

यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने भी कहा हैं- अपनी जीवनी शक्ति का श्रेष्ठतम उपयोग ही प्रसन्नता हैं। जो मन के सन्तोष, विश्वास की शान्ति में निहित हैं।

स्वास्थ्य के लिए अच्छा टॉनिक:

हँसना स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा टॉनिक हैं। शरीर में पेट और छाती के बीच एक डायफ्राम होता हैं जो हँसते समय धुकधुकी का काम करता हैं। नियमित रूप से हँसना, शरीर के सभी अवयवों को ताकतवर और पुष्ट करता हैं। खुलकर हँसने से मनुष्य के रक्त संचार की गति बढ़ जाती हैं और पाचनतंत्र अधिक कुशलता से कार्य करता हैं। हँसी श्वसन क्रिया भी तेज करती हैं। हँसने के कारण फेफड़े के रोग नहीं होते हैं। हँसने से ऑक्सीजन का संचार अधिक होता हैं और दूषित वायु बाहर निकलती हैं।

हँसने का एक महत्वपूर्ण लाभ यह भी है कि यह जीवन की नीरसता, एकाकीपन, नैराश्य, भावना, थकान, मानसिक तनाव और शारीरिक दर्द में राहत दिलाता है। हँसने से पसीना अधिक आता है और शारीरिक गंदगी सरलता से बाहर निकल जाती हैं।

डाक्टर फ्रेंच का कहना हैं कि अपने बच्चों को हमेशा प्रसन्न रहने की शिक्षा देनी चाहिए। कई माता-पिता अपने बच्चों को जोर से हँसने पर मना करते हैं। इससे बच्चों का स्वाभाविक उत्साह नष्ट हो जाता हैं। यदि बच्चों में हँसी का विकास नहीं हुआ, तो आगे जाकर वह अपने आसपास हँसी-खुशी का वातावरण नहीं बना पाएगा, जिससे सैकड़ों व्यक्ति हँसने से वंचित हो जायेंगे।

अधिक बुद्धिमान होते हैं हँसने वाले बच्चे:

मनोवैज्ञानिक प्रयोगों से यह स्पष्ट हुआ है कि अधिक हँसने वाले बच्चे अधिक बुद्धिमान होते हैं। हँसना, बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। जापान के लोग अपने बच्चों को प्रारम्भ से ही हँसते रहने की शिक्षा देते हैं, वे इस सिद्धान्त को मानते हैं कि दुनिया में जय-पराजय, सफलता-असफलता, सुख-दुःख जीवन में धूप-छाँव की भाँति आते हैं। यदि मनुष्य दोनों परिस्थितियों में हँसमुख रहता हैं तो उसका मन सदैव काबू में रहता हैं।

स्टेनफोर्ड मेडिकल स्कूल में मनोवैज्ञानिक डॉ. विलियम फ्राय का तो यहाँ तक कहना है कि हँसी के बिना तो जीवन

ही नहीं हैं। यदि रोगी व्यक्ति हँसता नहीं है तो वह प्रायः और अधिक रोगग्रस्त हो जाता है। हँसना शरीर को झकझोर देता है, जिससे शरीर में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाली (एंडोफ्रीम) हारमोन दाता प्रणाली सुचारू रूप से चलने लगती है। यह रोग से छुटकारा दिलाने में काफी सिद्ध हो सकती है।

चैन की नींद आती है हँसने से:

रोग निवारण का अचूक उपाय है- हँसना। यदि प्रत्येक मनुष्य हँसने का प्राकृतिक रहस्य समझ लें, तो उसे कभी डाक्टर, चिकित्सक या वैद्य के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। प्रसन्न रहने के लिए मनुष्य को एक कौड़ी भी खर्च नहीं करनी पड़ती है। प्रख्यात सामाजिक चिंतक और लेखक डेल कारनेगी का कथन है- **हँसी या मुस्कराहट पर हमें कुछ खर्च नहीं करना पड़ता, परन्तु यह बहुत कुछ पैदा कर सकती है। पाने वाला मालामाल हो जाता है और देने वाला कभी गरीब नहीं होता।**

नार्मन कर्जिस ने अपनी लोकप्रिय पुस्तक “एनाटोमी ऑफ अनइलनेस” में लिखा है कि 20 मिनट के लिए दिल खोलकर कहकहा लगाने के बाद वह दो घण्टे तक चैन की नींद सो सकते हैं तथा हँसी से कई गम्भीर बीमारियों के मरीजों को फायदा होता है। न्यूजर्सी के डा. मर्विन ई हेरिंग के अनुसार जब जोर से कहकहा लगाया जाता है, जो उदर, फेफड़े और यकृत की मालिश हो जाती है।

मुस्कराता चेहरा सभी को पसन्द है बड़े-बड़े संघर्षों, मुसीबतों में भी मुस्कराएँ। किसी से मिलें तो मुस्कराकर मिलें। प्रसन्नता के भाव में बात कीजिए। सामनेवाला व्यक्ति अवश्य ही प्रभावित होगा। होठों की हल्की-सी मुस्कान और प्यार भरे शब्द किसी को इतनी शान्ति और मानसिक राहत दे सकते हैं, जितनी हजारों रूपयें खर्च करने पर भी प्राप्त नहीं हो सकती। आप दिन भर में शारीरिक और मानसिक कार्य से थके-हारे घर लौटें और आपका स्वागत हल्की-सी मुस्कान के साथ हो, तो यह निश्चित मानिए कि आपकी थकावट आधी रह जायेगी।

हसने से तनाव और यन्त्रणा से मुक्ति:

पंजाब के विख्यात हास्य सेवी भाई गुरुमानसिंह तीर ने लिखा है- “हमारी हास्यप्रियता में लगातार गिरावट आती जा रही है। यदि हाजिरजवाबी, हास्य और व्यंग्य को जीवित रखने के लिए युद्धस्तर पर प्रयास नहीं किये गये, तो भारतीय

जनता तनाव और यंत्रणा की शिकार बन जाएगी।”

कुछ वर्षों पूर्व हैदराबाद की हास्य संस्था ‘जिन्दा जीवन-ए-हैदराबाद’ ने विश्व हास्य सम्मेलन आयोजित किया था, जिसमें अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। सम्मेलन का लक्ष्य था कि हँसने के रोग को संक्रामक बीमारी की तरह फैलने दिया जाए। तनाव के क्षणों में महात्मा गाँधी मजाक करने से बाज नहीं आते थे, उनका कहना था, “अगर मैं हँसना नहीं जानता, तो कभी का पागल हो जाता।” एक बार गाँधीजी ने सुबह उठने के बाद तीन मिनट तक खूब हँसने को कहा। सुबह हर गली-कूचे के बाहर बच्चों के खिलखिलाने की आवाज आने लगी। मुहल्ले के लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ। जब बात मालूम हुई तो महात्मा गाँधी के पास कुछ लोग आये और पूछा- “आपने बच्चों को क्या सिखा दिया।” गाँधीजी ने कहा- “एक सप्ताह बाद आना।” एक सप्ताह के बाद मुहल्लेवालों ने देखा कि बच्चों का स्वास्थ्य पहले से बहुत अच्छा है। गाँधीजी ने एक बार कहा था- “यदि आप हँसेंगे तो सब लोग आपका साथ देंगे, लेकिन आप रोयेंगे तो आपको अकेले ही रोना पड़ेगा।

डॉ. चोपड़ा का कहना है कि रोजमर्रा की जिन्दगी में हास्यप्रियता के तीन लाभ हैं-

- (1) यह शरीर को भला-चंगा रखने का प्राकृतिक तरीका है-
- (2) यह तनाव से मुक्ति का अच्छा तरीका है।
- (3) यह रिश्ता बढ़ाने, बनाने और उसे निभाने में अच्छी भूमिका अदा करता है।

डॉ. चोपड़ा ने दाब निवारक उपायों के अग्रणी अमेरिकी विशेषज्ञ डॉ. काजिस का हवाला देते हुए है कि डॉ. काजिस के अनुसार हँसी शरीर का आंतरिक जाँगींग है। दाब का निवारण करती है और हृदयाघात (हार्टअटैक) आदि दबाव जनित बीमारियों के खतरे से मुक्त रखती है।

हँसने से दिल हल्का होता है, तनाव घटता है, तंदरूस्ती के लिए यह अमृत है। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि किसी पर हँसने के बजाय किसी के साथ हँसना सीखा जाए। डॉ. चोपड़ा के अनुसार हँसी का सर्वोच्च रूप अपने आप में हँसना है और दूसरों पर हँसना निम्नतम रूप है।

तृप्ति, बंदा रोड,

भवानीमण्डी (राज०) 326502



गाँधी जयंती पर विशेष

महात्मा गाँधी- अनुभूतियाँ एवं जीवन दर्शन

- पी.डी. सिंह

महात्मा गाँधी कहते थे, “मानवीय गतिविधि के अतिरिक्त मैं किसी धर्म को नहीं जानता हूँ और यही अन्य समस्त गतिविधियों को नैतिक आधार प्रदान करता है।” वे मानव जीवन की पूर्णता में विश्वास करते थे साथ ही समाज की समझदारी एवं मानसिक संतुलन में। उनके लिए मानव जीवन एक कृत्रिम समग्रता है जिसे मनमाने ढंग से विभक्त नहीं किया जा सकता। हर जीवन की नियति है, अच्छी प्रकार से और प्रतिष्ठा से जिया जाय।

गाँधी जी ने अपना जीवन अपने चिन्तन संपूरित संजोये सिद्धान्तों एवं मूल्यों के साथ जिया। उनके लिये जीवन एक ईश्वर प्रदत्त उपहार था अतः यह अपेक्षित था कि वह एकीकृत एवं सार्थक हो। वे ऐसे विद्वान या दार्शनिक नहीं थे जो अपने विचारों को कोई दर्शनशास्त्र का सिद्धान्त बतायें। उन्होंने विभिन्न विषयों पर बहुत कुछ लिखा है लेकिन यह सब लोगों को कुछ करने की दिशा में प्रेरित एवं निर्देशित करना ही था।

गाँधी जी का चिन्तन व सोच किसी विशिष्ट लीक से हटकर एवं क्रांतिकारी था। यह रचनात्मक प्रक्रिया सामयिक चुनौतियों से जूझने का उत्पाद था। उनकी सोच सहज

थीं और उनकी कार्यप्रणाली सम्बद्ध थी। राष्ट्र के समक्ष खादी एवं कुटीर उद्योग अपनाने की बात कही तो किसी व्यवस्थित अर्थशास्त्री के रूप में नहीं, बस सहज ढंग से इसकी उपयोगिता एवं प्रभाव स्पष्ट करके अपनाने की अपील की। उन्होंने सीधी और सरल घरेलू उपयोगिता को स्पष्ट किया। उन्होंने व्यापक दरिद्रता की चर्चा की, और लोगों के विवशतापूर्ण आलस्य को महसूस किया और सदैव यही उद्घोष किया कि भारत को जानना, समझना, जगाना है तो गाँवों पर ध्यान दो क्योंकि वास्तविक भारत गाँवों में ही है।

उन्होंने कभी-भी हिन्दू एवं मुस्लिम तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष अथवा विवाद को महत्व नहीं दिया। यद्यपि अपने आपको हिन्दू कहना उन्हें अच्छा लगता था लेकिन हिन्दू धर्म में व्याप्त निर्दयतापूर्ण छूआछूत का घोर विरोध किया और इसको दूर करने का व्रत लिया। वे जाति प्रथा में भी आस्था नहीं रखते थे। वे हिन्दू धर्म में प्रचलित कर्मकांड एवं रीति रिवाजों को नहीं स्वीकारते थे। उनका हिन्दुत्व गीता और उपनिषदों की शिक्षाओं पर आधारित था।

वे कहा करते थे, मैं मानव मात्र और विशेषतः दरिद्रनारायण की सेवा में ईश्वर के दर्शन कर लेता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि ईश्वर न स्वर्ग में है न मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर में वह तो हर व्यक्ति में अन्तरव्याप्त है। ईश्वर को प्राप्त करने का सीधा और सही मार्ग है कि हम ईश्वर की सभी संतानों एवं समग्र प्रकृति से प्रेम करें एवं सेवा करें।

गाँधी जी की दृष्टि में धर्म एवं नैतिकता अन्योनाश्रित एवं अंतर्बदल हैं और नैतिकता के आधारभूत सिद्धान्त है, सत्य एवं अहिंसा जो उनकी प्रार्थना “वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाणे रे.....” में अन्तर्निहित है। वे यह भी कहा करते थे कि “ धर्म मानव की रचना है अतः इसमें कमियाँ भी हैं और वे स्वयं मनुष्यों के कारण ही हैं।” गहरे अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर मेरी मान्यता है कि सभी धर्म अच्छे हैं और सच्चे हैं तथा सभी में कमियाँ भी हैं। मैं बाइबल, कुरान और जेंद अवेस्ता से भी उतना ही प्रभावित हूँ जितना कि वेदों से व रामायण इत्यादि से।” उनकी मान्यता थी कि धर्म की साधना किसी गुफा या पहाड़ की चोटी पर नहीं होती है। वे ईश्वर में आस्था रखते थे लेकिन ईश्वर का

स्वरूप नैतिक मर्यादाओं एवं सेवा में ही मानते थे। ईश्वर भक्ति के रूप में वे प्रार्थना में दृढ़ आस्था रखते थे। उनकी प्रार्थना सभाओं में कभी भी कोई देश भक्ति गीत नहीं गाया गया। वे कहते थे, “देश से प्रेम अच्छा है और वांछनीय भी है पर इसको ईश्वर भक्ति नहीं कह सकते।”

गाँधी जी की आस्था आत्मसंयम में थी। वे अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपने आत्मसंयम एवं संयमित जीवन को देते थे। वे जो कुछ कहते वही करते थे और जो करते थे वहीं कहते थे, उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होता था। जो कहते उसे पूरा करते थे यही उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति का आधार था। वे कहा करते थे, एक सीमा के पश्चात् मनुष्य की इच्छाएँ उसके दुख का कारण बन जाती हैं। अतः इच्छा व आवश्यकताओं को सीमित ही रखना चाहिए।

गाँधी जी द्वारा प्रेरित-निर्देशित आंदोलन सभी सहनशीलतायुक्त विरोध थे जैसे कि सविनय अवज्ञा, असहयोग आंदोलन इत्यादि। अपनी सभी ब्रिटिशराज विरोधी गतिविधियों को उन्होंने एक विशिष्ट शैली और नाम दिया, “सत्याग्रह”।

‘सत्याग्रह’ मानवीय बंधुत्व में विश्वास करता है यह “सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट” की अवधारण को नकारता है। सत्याग्रही विरोध तो प्रेम, पारस्परिक सहयोग एवं सहायता में विश्वास करता है। सत्याग्रह तो सत्य के प्रति दृढ़ निष्ठा का प्रतीक है और अहिंसा सत्य का स्वाभाविक उत्पाद है। “सत्य और अहिंसा” उतने ही पुराने हैं। जितने पहाड़, “गाँधी जी कहा करते थे। बचपन से ही उनकी सत्य के प्रति निष्ठा थी। वे हिंसा को असत्य का उत्पाद मानते थे। सत्य और अहिंसा के साथ सत्याग्रह के लिये उन्होंने एक और सिद्धान्त का समायोजन किया, वह था “साधन की पवित्रता” अर्थात् लक्ष्य प्राप्ति के साधन का पूर्णतया पवित्र होना आवश्यक है।

गाँधी जी कहते थे कि गरीबी व्यापक नहीं होनी चाहिए। प्रचलित सामाजिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन करके व्यापक निर्धनता को दूर किया जा सकता है। दौलत समाज से ही आती है समाज में ही बराबर-बराबर बंट जानी चाहिए। किसी भी कारखाने या कार्यालय के कर्मचारी व मजदूर को जीवन के लिये आवश्यक भोजन, वस्त्र, घर शिक्षा चिकित्सा इत्यादि सुविधाएँ मिलनी ही चाहिए।

उनका कथन एवं मान्यता थी कि “प्रकृति और धरती माता हमारी आवश्यकताओं के लिये पर्याप्त साधन प्रदान करती है लेकिन लालच की पूर्ति नहीं कर सकती।” जब तक हम आवश्यकता से अधिक का उपयोग करेंगे विषमता नहीं जा सकती। उन्होंने चरखे को कमाई का व्यवसाय न बताकर केवल एक सहायक घरेलू उद्योग बताया था।

गाँधी जी हिन्दु-मुस्लिम एकता के समर्थक थे और कहते थे कि यह केवल आजादी की लड़ाई के लिए ही नहीं अपितु शान्ति काल में और सदैव सह-अस्तित्व के रूप में भी उतनी ही आवश्यक है राष्ट्र के सम्यक निर्माण, विकास एवं सहजीवन हेतु।

अहिंसा के समर्पित समर्थक के रूप में वे किसी भी प्रकार की सामाजिक, राजनैतिक या आर्थिक असमानता के विरोधी थे क्योंकि इससे शोषण पनपता है। वे स्त्री और पुरुष में भी भेद नहीं करते थे। वे बाल विवाह के विरोधी थे। उन्होंने अपने सत्याग्रह आंदोलन में महिलाओं को भी सम्मिलित किया था। वे स्त्रियों के समान अधिकार एवं सम्मान के पक्षधर थे। वे किसी भी प्रकार के व्यसन के घोर विरोधी थे।

उनके ‘नई तालीम’ में सीखने के साथ समाजोपयोगी उत्पादन समाहित था। अपने रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा वे हाथ, मस्तिष्क एवं हृदय के उन्नयन में ही एक स्वतंत्र देश के नागरिकों की अपेक्षा रखते थे। गाँधी जी वस्तुतः आधुनिक थे और स्वच्छता, स्वास्थ्यप्रद भोजन, शारीरिक श्रम का सम्मान, महिला शिक्षा, आर्थिक समानता सबके अधिकारों की सुरक्षा एवं जनतांत्रिक भावना, अछूतों से निकट संपर्क, दरिद्र नारायण की सेवा तथा वासना मुक्त होना यही उनकी आधुनिकता थी।

कालजयी युगपुरुष राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने न केवल स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अहिंसक संघर्ष हेतु प्रेरित किया अपितु राष्ट्र की जनता को सार्थक, प्रभावी, शान्त, सत्यनिष्ठ एवं अहिंसावादी जीवन जीने की राह दिखाई। उस महामना मनीषी, संता, देशभक्त एवं समर्पित समाजसेवी का नमन, वन्दन, अभिनन्दन!

टैगोर ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
शास्त्री नगर, जयपुर-302016

अनन्य वचन



पालिका समाचार

जिंदगी हमें बहुत कुछ देती एवम् सिखाती है किन्तु मनुष्य आभार प्रकट करना नहीं जानता। जब से उसने आँखें खोली और जब वो बन्द करेगा तब तक के सम्पूर्ण काल में यदि वह एक बार तहेदिल से प्रकृति, ईश्वर, जन्मदातों का शुक्रगुजार है तो हमारे जीवन की बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न होने से पूर्व ही दमित हो जाएँ।

आदि से अंत तक हमारा जीवन साभार होना चाहिए। साधु व्यक्ति तो सफलतापूर्वक जीवन में सधन्यवाद होते रहेंगे एवम् अपनी जीवनवृत्ति को जीएंगे। किन्तु कुछ गर्व एवम् अहम भाव से त्रस्त व्यक्ति 'मैं' ओर 'मेरी' में ही रह जाएंगे।

अगर हम यह सोचें कि हम स्वयं उपजे हैं, स्वयं ने ही सब कुछ हासिल किया है और हम इस दुनिया के राजा हैं तो हम वास्तव में वास्तविकता से दूर जा रहे हैं और सब कुछ खो रहे हैं साथ ही हम जिंदगी के असली चेहरे से वंचित हैं।

हमारे पास अपनी थाली में आने वाली मात्र एक रोटी के लिए हम कितने व्यक्तियों के आभारी है या हो सकते हैं यह हम नहीं जानते किन्तु हम सोचते हैं कि यह हमने कमाई है, और तभी आई है यह हमारा हक है। किन्तु इसके पीछे प्रकृति, किसान, बीज, ईश्वर और न जाने कितने व्यक्तियों की असीम मेहनत है जिसके कारणवश आज हम इसे अपनी थाली में पा रहे हैं।

यदि हम कृतज्ञ, आभारी होंगे तो जीवन के हर स्तर पर ग्रहणशील भी होंगे। यदि हम किसी के प्रति आभारी होंगे तो हम उसे आदर से भी देखेंगे। किन्तु कृतज्ञ होने का अभिप्राय मात्र थैंक्यू कह देना, या धन्यवाद कह देना नहीं है। चूंकि विश्व में बहुत सी चीजें, ऐसी हैं जो साक्षात् सामने न होकर भी हमें जीवंत और सुरक्षित रखती है.....

मित्रों ! इस कालम में हम अगले अंक में आगे बढ़ेंगे क्रमशः
आपका कालम.....

- रीमा कामरा
हिन्दी विभाग

लेखकों से अनुरोध

'पालिका समाचार' पत्रिका में किसी भी विधा की उत्कृष्ट रचना का स्वागत है।

रचना कागज़ पर एक तरफ हस्तलिखित या टंकित हो।

लेखक रचना की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।

रचना का मौलिक एवं अप्रकाशित होना अनिवार्य है।

अपनी रचनाओं को लेखक editor palika samachar@gmail.com पर मेल कर सकते हैं।



प्रिय पाठको !

'पालिका समाचार' में प्रकाशित रचनाओं के संदर्भ में हमें आपकी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों का इंतजार रहेगा।

-सम्पादक

स्मृति-शेष

अमृता प्रीतम

मैं तुम्हें फिर मिलूँगी

मैं तुम्हें फिर मिलूँगी
कहाँ? किस तरह? नहीं जानती
शायद तुम्हारी कल्पना की चिंगारी बनकर
तुम्हारे कैनवस पर उतरूँगी
या शायद तुम्हारे कैनवस के ऊपर
एक रहस्यमय रेखा बनकर
खामोश तुम्हें देखती रहूँगी
या शायद सूरज की किरन बनकर
तुम्हारे रंगों में घुलूँगी
या रंगों की बाँहों में बैठकर
तुम्हारे कैनवस को
पता नहीं कैसे-कहाँ?
पर तुम्हें जरूर मिलूँगी
या शायद एक चश्मा बनी होऊँगी
और जैसे झरनों का पानी उड़ता है
मैं पानी की बूँदें
तुम्हारे जिस्म पर मलूँगी
और एक ठण्डक सी बनकर
तुम्हारे सीने से लिपटूँगी.....

मैं और कुछ नहीं जानती
पर इतना जानती हूँ
कि वक्त जो भी करेगा
इस जन्म मेरे साथ चलेगा.....

यह जिस्म होता है
तो सब कुछ खत्म हो जाता है
पर चेतना के धागों
कायनाती कणों के होते हैं
मैं उन कणों को चुनूँगी
धागों को लपेटूँगी
और तुम्हें मैं फिर मिलूँगी
(मैं तुम्हें फिर मिलूँगी पुस्तक से साभार)

सुनहु सखा कह कृपा निधाना।
जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना।।
सौरज धीरज तेहि स्थ चाका।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।

रा०च० मानस्

मुख्य सम्पादक जी

प्रभु। श्रीमान आपके सम्पादन में पालिका समाचार नई नवेली-सुन्दर दुल्हन की तरह श्रृंगरित तथा बहुरंगी, मोहक साज-सज्जा के साथ यह सब आपकी प्रतिभा-योग्यता कुशलता का प्रमाण है। पालिका समाचार का तो आपने कायाकल्प ही कर दिया है। प्रशंसा जितनी भी की जाए कम है। बहुत सुन्दर-श्रेष्ठतम अनूठी लगी। मेरे पास देश भर से लगभग 30 पुस्तकें आती हैं। आपने सबको पीछे धकेल दिया है। सामग्री, सम्पादन की स्तर की दृष्टि से यह श्रेष्ठ पत्रिका बना दी है। आपने मेरी दृष्टि से आपको साधुवाद। बहुमुखी प्रतिभा के आप धनी-साहित्य मनीषी हैं अब तक रचनाओं के चयन में भी आप पूर्ण सजग रहे हैं। सम्पूर्ण सामग्री उपयोगी-पठनीय रोचक भी संग्रहणीय है। श्रीमान सचिव महोदय मान्यवर मुख्य सम्पादक जी आपकी विद्वता, सुरुचि सम्पन्नता की सम्पादन कौशल प्रशंसनीय है। आपको बारंबार बधाई।

आपका ही, डॉ० रामसिंह यादव
14, उर्दूपुरा, उज्जैन-456006

नई दिल्ली पालिका समाचार, मई-जून 2013 अंक में प्रेमा राय का लेख 'जीवन शैली से गहरा नाता है मधुमेह रोग का।' दिल्ली की जनता के लिए जो इस रोग से ग्रसित हैं, अति लाभदायक एवं अमूल्य है। जितनी महत्वपूर्ण जानकारी इस रचना में दी गई है, अति दुर्लभ है। दिल की गहराईयों को छू रही हैं। सर गंगाराम अस्पताल की वरिष्ठ डॉयबिटोलौजिस्ट डा. मीना छाबड़ा द्वारा हमारे शरीर पर मधुमेह का हमला कब-कैसे और क्यों होता है आदि समस्त जानकारी इसके लक्षणों सहित इस रचना में एकत्रित की गई है।

इसके अतिरिक्त आपकी इस पत्रिका में 'रोगनाशक-गर्मी का राजा 'पुदीना' श्री अक्षय कुमार जैन की उपयोगी रचना है। रोगों को काबू में करने के महत्वपूर्ण नुस्खे भी दिए हुये हैं।

पत्रिका के सभी लेखकों को मेरा शत्-शत् नमन है।
जगदीश प्रसाद गुप्त
सी-303 सै0-1 अवंतिका, रोहिणी, दिल्ली-110085

माननीय महोदय,

पत्रिका का ताजा अंक मिला अत्यन्त आभारी हूँ। पत्रिका का नया रूप/कलेवर अत्यन्त आकर्षक मनमोहक है। पत्रिका निरन्तर प्रगति कर रही है। पत्रिका की सामग्री रोचक/पठनीय है। पत्रिका आगे और प्रगति करे, शुभकामनाएँ।

श्रीमती वन्दना सक्सेना

कवियत्री, एमआईजी 1 ब्लाक, एफ,सरस्वती नगर, भोपाल-462003

आदरणीय संपादक जी, सादर वन्दे।

'पालिका समाचार' पत्रिका का नवीन स्वरूप, चित्रांकन, पेपर क्वालिटी एवं रचनायें सभी कुछ स्वागत योग्य है।

पी.डी.सिंह

निदेशक, टैगोर ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, शास्त्री नगर,जयपुर-302016

पालिका समाचार का अंक प्राप्त करके बड़ी प्रसन्नता हुई/आभारी हूँ। पत्रिका को देखकर लगा कि इसमें काफी सुधार हुआ है। अनेक परिवर्तन आये हैं। तदर्थ बधाई स्वीकारें।

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

10/611, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)

पालिका समाचार का यह नया रूप मेरे सारे परिवार को भा गया है। साथ ही कागज और टाईप भी पहले से कहीं अच्छी और शोभनीय है। अंक पाते ही तथा देखकर, पढ़कर पत्रिका से पुनः जुड़ने का मन होने लगा है।

डॉ० हरिसिंह 'हरीश'

'सुमन साहित्य सदन' नया दरवाजा, गाँधी मार्ग, दतिया (म०प्र०)

आपने तो प्रधान संपादक के पद की गरिमा के अनुकूल, व्यक्तिगत रुचि लेते हुए पत्रिका का काया-कल्प ही कर दिया और वह नितान्त नए कलेवर और नई सज-धज के साथ हमारे सामने प्रस्तुत है। पत्रिका (बल्कि पत्रिकाओं) को नई ऊँचाई तक उठाने के निमित्त मैं आपको हृदय की गहराई से मुबारकबाद पेश करता हूँ।

हतराम इस्लाम

635/547, अतर सुईया, इलाहाबाद-211003

1. परिषद् मुख्यालय, पालिका केन्द्र में 5 अगस्त, 2013 को नव नियुक्त परिषद् अध्यक्ष श्री जलज श्रीवास्तव ने श्री धर्मेन्द्र, संयुक्त सचिव, शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार तथा सुश्री निला मोहनन, अतिरिक्त सचिव, दिल्ली सरकार एवम् श्री आई.ए. सिददकी एवम् श्री सूका राम को सदस्य के रूप में शपथ दिलाई।



2. परिषद् अध्यक्ष श्री जलज श्रीवास्तव ने जोरबाग स्थित राजधानी नर्सरी के निकट नव-निर्मित पार्क का उद्घाटन 10 अगस्त, 2013 को पौधा रोपण करके किया।

3. परिषद् अध्यक्ष श्री जलज श्रीवास्तव ने 15 अगस्त, 2013 को परिषद् मुख्यालय, पालिका केन्द्र के प्रांगण में भारत के 67वें स्वाधीनता दिवस के पावन अवसर पर तिरंगा फहराया परिषद् विद्यालयों की छात्राओं द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस समारोह में श्री अशोक आहूजा, श्री आई.ए. सिददकी परिषद् सदस्य, परिषद् सचिव श्री विकास आनंद के अतिरिक्त परिषद् के अधिकारी/कर्मचारी तथा स्कूली बच्चे भी उपस्थित थे।



4. श्रीमती शीला दीक्षित, मुख्यमंत्री दिल्ली ने चाणक्यपुरी स्थित बापू धाम में बहुमंजिलीय कर्मचारी आवासीय परिसर का 24 अगस्त, 2013 को उद्घाटन किया। इस अवसर पर परिषद् अध्यक्ष श्री जलज श्रीवास्तव, परिषद् सचिव श्री विकास आनंद तथा परिषद् सदस्यों, अधिकारी गणों के अतिरिक्त भारी संख्या में स्थानीय नागरिक उपस्थित थे।



5. नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के हिन्दी विभाग द्वारा परिषद् कर्मचारियों में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु 16 अगस्त, 2013 को परिषद् के कन्वेंशन सेंटर में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री प्रेम सिंह, उपनिदेशक ने उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों के समक्ष अपने विचार रखे। इस अवसर पर सहायक पुस्तकें भी वितरित की गयी। कार्यशाला के समापन पर श्रीमती अनीता जोशी, हिन्दी अनुवादक ने उपस्थित कर्मचारियों/अधिकारियों का धन्यवाद किया।

